

200 लि. बोतल का मूल्य ₹ 225/-

इफको की नैनो यूरिया को आपके खेतों का रु. 10000/- (अधिकतम 2 टन) का अनुमति है।

इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

फसलों की भरपूर पैदावार के लिए

इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर कृषि

200 लि. बोतल का मूल्य ₹ 225/-

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड

राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय तल, पर्यावास भवन जेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

ऑफिस-समय 10:30 AM से 5:30 PM

वेबसाइट: www.nanoarea.in - www.nanodap.in | फोन: 1800 180 1987 | ifco.coop | ifco.coop | ifco.PR | ifco

गेहूं के समर्थन मूल्य में मात्र 25 रुपये क्विंटल की वृद्धि

रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित

(विशेष प्रतिनिधि)

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने रबी विपणन वर्ष 2027-28 के लिये रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित कर दिया है। विगत दिनों प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में संपन्न आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय कमेटी ने इसे स्वीकृति प्रदान की। केन्द्र सरकार ने छः रबी फसलें गेहूं, चना, मसूर, सरसो, सुरजमुखी एवं जौ के एमएसपी को मंजूरी दी। सरकार ने दस साल के बाद पहली बार गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य सबसे कम मात्र 25 रुपये क्विंटल बढ़ाया है। गत वर्ष गेहूं की एमएसपी 160 रुपये क्विंटल बढ़ाई गई थी।

रबी विपणन वर्ष 2027-28 के लिये गेहूं का समर्थन मूल्य 25 रुपये प्रति क्विंटल वृद्धि के साथ 2610 रुपये क्विंटल हो गया है। दलहन फसलों की एमएसपी 83 रुपये से लेकर 675 रुपये क्विंटल तक बढ़ाई गई है। चने का भाव 83 रुपये बढ़ा कर 5958 रुपये क्विंटल कर दिया गया है। मसूर की एमएसपी में 390 रुपये की वृद्धि की गई है। अब



रबी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य

फसल	एमएसपी 26-27	वृद्धि	एमएसपी 27-28
गेहूं	2585	25	2610
चना	5875	83	5958
जौ	2150	136	2286
मसूर	7000	390	7390
सरसो	6200	413	6613
कुसुम	6540	675	7215

(भाव- रुपये प्रति क्विंटल)

पिछले पांच वर्षों का रबी फसलों का एमएसपी

फसल	एमएसपी 2021-22	एमएसपी 2022-23	एमएसपी 2023-24	एमएसपी 2024-25	एमएसपी 2025-26
गेहूं	2,015	2,125	2,275	2,425	2585
चना	5,230	5,335	5,440	5,650	5875
जौ	1,635	1,735	1,850	1,980	2150
मसूर	5,500	6,000	6,425	6,700	7000
सरसो	5,050	5,450	5,650	5,950	6,200

(भाव- रुपये प्रति क्विंटल)

मसूर की एमएसपी 7390 रुपये क्विंटल कर दी गई है।

जौ का समर्थन मूल्य 2286 रुपये क्विंटल किया गया है। इसमें 136 रुपये क्विंटल की वृद्धि की गई है। प्रमुख तिलहनी फसल सरसों की एमएसपी 413 रुपये क्विंटल बढ़ाकर 6613 रुपये प्रति क्विंटल किया गया है। कुसुम के समर्थन मूल्य में 675 रुपये की वृद्धि के साथ 7215 रुपये क्विंटल किया गया

है। कुसुम की एमएसपी सबसे अधिक बढ़ाई गई है। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि सभी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य उत्पादन लागत से अधिक 50 प्रतिशत से भी अधिक है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार किसानों के कल्याण के लिये प्रतिबद्ध है। विभिन्न किसान संगठनों ने गेहूं के समर्थन मूल्य को किसानों के साथ घोर मजाक बताया है।

मप्र में 4 प्रतिशत कम बारिश 29 जिलों में सामान्य से कम वर्षा

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। इस साल मानसूनी बारिश मध्यप्रदेश के साथ भी भेदभाव कर गयी। देशभर में जहां मानसूनी वर्षा 14 प्रतिशत कम हुई है वहीं मध्यप्रदेश में यह बारिश 4 प्रतिशत कम हुई है। 1 जून से 30 सितंबर 2026 तक मध्यप्रदेश में वास्तविक वर्षा 907.2 मिलीमीटर हुई है जबकि इस दौरान सामान्य वर्षा 945.5 मिलीमीटर होनी चाहिये। इसमें 4 प्रतिशत की कमी पायी गई है। प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में जहां 12 प्रतिशत कम बारिश हुई है वहीं पूर्वी हिस्से में सामान्य से 4 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। पश्चिमी क्षेत्र में पूरे वर्षाकाल में 774 मिलीमीटर वर्षा हुई है जो कि सामान्य वर्षा 877.3 मिलीमीटर से 12 प्रतिशत कम है। पूर्वी क्षेत्र में 1080.7 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई जबकि सामान्य वर्षा 1043.4 मिलीमीटर होनी चाहिये। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी अनुसार इस साल पश्चिमी क्षेत्र वर्षा के मामले में पीछे



जिला	वर्षा %	जिला	वर्षा %
अलिराजपुर	-45	नीमच	-12
रतलाम	-35	रायसेन	-18
धार	-40	सीहोर	-17
शाजापुर	-21	उज्जैन	-27
झाबुआ	-35	विदिशा	-18
बड़वानी	-11	छिंदवाड़ा	-21
देवास	-13	जबलपुर	-12
बैतूल	-31	रीवा	-13
हरदा	-34	सागर	-13
इंदौर	-27	सिवनी	-16
खंडवा	-10	पांडुरंगा	-23
नर्मदापुरम	-34	(स्रोत : मौसम विभाग)	

रह गया। इस क्षेत्र के 25 जिले ऐसे हैं जहां औसत वर्षा कम हुई है। 12 जिलों में -20 से -45 प्रतिशत कम बारिश हुई है। सामान्य से अधिक वर्षा वाले जिलों की संख्या 25 है जो अधिकांश मध्य एवं पूर्व क्षेत्र के हैं। विन्ध्य क्षेत्र का सतना, शहडोल, मऊगंज ऐसे जिले हैं जहां पर सामान्य से 50 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। बुंदेलखण्ड के निवाड़ी में भी सामान्य से 59 प्रतिशत अधिक पानी गिरा है। अलिराजपुर, रतलाम, धार, इंदौर, झाबुआ, हरदा, नर्मदापुरम, रायसेन, शाजापुर, सीहोर, उज्जैन, विदिशा, छिंदवाड़ा एवं पांडुरंगा में -17 से -45 प्रतिशत तक कम बारिश हुई है। जिन जिलों में सामान्य से कम बारिश हुई है वहां पर रबी फसलों के लिये संकट पैदा हो गया है।

चालू वित्त वर्ष में खाद्यान्न उत्पादन लक्ष्य में मामूली कमी

नई दिल्ली। अगले कुछ महीनों में अल नीनो का असर बढ़ने की आशंका के बीच केंद्र सरकार ने 2026-27 फसल वर्ष में 37.3 करोड़ टन अनाज उत्पादन का लक्ष्य रखा है। यह 2025-26 के वास्तविक उत्पादन से लगभग 30 लाख टन कम है, क्योंकि कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और राजस्थान के कुछ हिस्सों में सूखे की स्थिति को लेकर चिंता बढ़ रही है।

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दो दिवसीय राष्ट्रीय रबी अभियान सम्मेलन के दौरान संवाददाताओं से कहा, '2025-26 में 36.26 करोड़ टन अनाज उत्पादन का लक्ष्य रखा गया था, जबकि वास्तविक उत्पादन बढ़कर 37.656 करोड़ टन तक पहुंच गया। अल नीनो की स्थिति को देखते हुए 2026-27 के लिए उत्पादन लक्ष्य 37.393 करोड़ टन निर्धारित किया गया है, जिसमें रबी में 17.772 करोड़ टन उत्पादन का लक्ष्य शामिल है।' उन्होंने कहा कि सरकार ने राज्यों से मिली प्रतिक्रिया और जमीनी हकीकत के आधार पर लक्ष्य तय किया है, लेकिन आश्वासन दिया कि देश के कुछ हिस्सों में अल नीनो, सूखे और

रबी 26-27 में 17.77 करोड़ टन उत्पादन का लक्ष्य : श्री चौहान

एफटीए के बारे में किसानों को जागरूक किया जाएगा

शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को कहा कि सरकार कई मुक्त व्यापार समझौतों के लाभों के बारे में किसानों को जागरूक करेगी, जो भारत ने किए हैं। इसके लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाएगा कि किसान इन लाभों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं। उन्होंने संवाददाताओं से बात करते हुए कहा कि कई भारतीय कृषि उत्पादों पर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में शून्य आयात शुल्क होगा।



बाढ़ की चिंताओं के बावजूद 2026-27 फसल वर्ष खरीफ सीजन में अनाज उत्पादन में कोई महत्वपूर्ण गिरावट नहीं आएगी। फसल वर्ष 2026-27 (जुलाई-जून) के लिए रबी सीजन में अनाज उत्पादन लक्ष्य 17.772 करोड़ टन निर्धारित किया गया है, जो 17.451 करोड़ टन के वास्तविक उत्पादन से अधिक है। श्री चौहान ने कहा कि हालांकि खरीफ की कुछ फसलों की बोआई का रकबा घटा है, लेकिन बोया गया कुल क्षेत्र पिछले साल के आसपास है।

उन्होंने कहा कि वर्षा की कमी वर्तमान में

लगभग 12 प्रतिशत है, जबकि सामान्यतया सूखे की स्थिति तभी मानी जाती है, जब संबंधित अवधि में वर्षा की कमी 20 प्रतिशत से अधिक हो। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि बारिश की मौजूदा कमी से उत्पादन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।' उन्होंने कहा कि उत्पादन के अंतिम अनुमान जल्द ही जारी किए जाएंगे। फसल वर्ष 2026-27 (जुलाई-जून) में खरीफ सीजन में अनाज उत्पादन का लक्ष्य 19.621 करोड़ टन निर्धारित किया गया था, जो पिछले साल के समान मौसम में हुए 17.414

करोड़ टन के वास्तविक उत्पादन से अधिक है। सबसे ज्यादा धान का रकबा घटा है और यह करीब 16.32 लाख हेक्टेयर कम हो गया है। मक्का, सोयाबीन और कपास के रकबे में भी कमी आई है। उड़द, बाजरा, ज्वार, तिल, सूरजमुखी, मूंग और अरहर की बोआई का रकबा बढ़ा है। श्री चौहान ने कहा, 'हमने जल की उपलब्धता और मिट्टी की नमी जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए और प्रतिकूल परिस्थितियों में फसल की स्थिति को समायोजित करने के लिए राज्यवार परामर्श किया। उसके बाद लक्ष्य निर्धारित किए हैं। हमारा उद्देश्य उन फसलों से बचना है जहां बारिश कम हुई क्षेत्रों में अधिक पानी के इस्तेमाल वाली है और जहां जलाशय का स्तर और मिट्टी की नमी कम है। इसके बजाय हम उन क्षेत्रों में दालों और तिलहनों जैसी फसलों की खेती का लक्ष्य रख रहे हैं। इन स्थितियों को ध्यान में रखकर लक्ष्य निर्धारित किया गया है।' कृषि मंत्री ने कहा कि वह प्रभावित राज्यों का खुद दौरा करेंगे और उनकी सरकारों के साथ निरंतर संपर्क में रहेंगे। उन्होंने कहा कि तात्कालिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई कृषि क्षेत्र खाली न रह जाए।

मानसून पर अल नीनो के असर से देश भर में 13 प्रतिशत कम बारिश

नई दिल्ली। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने बताया कि 2026 का दक्षिण-पश्चिम मानसून देश भर में दीर्घावधि औसत का 87 फीसदी बारिश के साथ समाप्त हुआ। अल नीनो के प्रभाव के कारण यह 2015 के बाद सबसे खराब मानसून रहा। वर्ष 2001 के बाद यह चौथा और 1901 के बाद 13वां सबसे कमजोर मानसून रहा। जून से सितंबर के दौरान देश में कुल 759.4 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई जबकि सामान्य औसत वर्षा 868.6 मिलीमीटर है। इस तरह बारिश में लगभग 12.6 फीसदी की कमी रही।

अल नीनो का सबसे अधिक असर दक्षिण और पूर्वी भारत में देखने को मिला, जहां बारिश दीर्घावधि औसत का क्रमशः 76 और 74 फीसदी रही यानी इन क्षेत्रों में सामान्य से 24 और 26 फीसदी कम बारिश हुई। पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भारत में मानसून के दौरान 1,016.3 मिलीमीटर बारिश हुई, जो 1901 के बाद सबसे कम है। दक्षिणी प्रायद्वीप में 542 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई जो 1901 के बाद चौथी और 2001 के बाद दूसरी सबसे कम

ग्यारह साल बाद सबसे खराब मानसून



मावटे की आशंका कम: मौसम विभाग के अनुसार अक्टूबर से फरवरी के मध्य शीतकालीन वर्षा (मावठा) की संभावना काफी कम है। इस दौरान सुपर अल नीनो सक्रिय होने से तापमान में वृद्धि की उम्मीद है। हालांकि मौसम विभाग ने इस बात से इंकार नहीं किया है कि समुद्री तूफान आने से कुछ राज्यों में सर्दियों में बारिश नहीं होगी। इस साल भले ही ठंड का अहसास समय पूर्व हो रहा है लेकिन ज्यादा ठंड पड़ने की उम्मीद कम है।

बारिश है। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि अल नीनो का प्रभाव दक्षिण और पूर्वी भारत में अधिक रहा। हालांकि ओडिशा जैसे पूर्वी राज्यों में कम दबाव वाले क्षेत्र लगातार बनने के कारण असर अपेक्षाकृत कम रहा। कम बारिश के बावजूद खरीफ फसलों की बुआई पर व्यापक असर नहीं पड़ा। हालांकि धान, कपास और मक्का जैसी फसलें प्रभावित हुईं। महाराष्ट्र और कर्नाटक में लंबे समय तक सूखे की स्थिति ने पैदावार को लेकर चिंता बढ़ा दी है। 24 सितंबर तक दक्षिण भारत

के जलाशयों में कुल क्षमता का केवल 50 फीसदी पानी बचा था जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह आंकड़ा 79 फीसदी था। 25 सितंबर तक खरीफ फसलों की बोआई लगभग 11.07 करोड़ हेक्टेयर में हुई जो पिछले वर्ष की समान अवधि से केवल 1.20 फीसदी कम है। देश की 36 मौसम संबंधी उपखंडों में से 18 (53 फीसदी भौगोलिक क्षेत्र) में सामान्य बारिश हुई, जबकि 17 उपखंडों (42 फीसदी क्षेत्र) में कम बारिश दर्ज की गई। ओडिशा में, जो देश के 5 फीसदी क्षेत्र में फैला है, सामान्य से अधिक बारिश हुई।

राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन में रबी तैयारियों पर मंथन

22 अक्टूबर से 30 नवंबर तक चलेगा 'खेत बचाओ अभियान'

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-रबी अभियान 2026 के दूसरे दिन केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में राज्यों के कृषि मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ रबी तैयारियों पर चर्चा हुई। सम्मेलन में केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय, संतुलित उर्वरक उपयोग, फसल विविधीकरण, प्राकृतिक खेती और किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने जैसे मुद्दों पर जोर दिया गया। सम्मेलन में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 10 राज्यों को 1200 करोड़ रुपये से अधिक के वित्तीय स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए।

श्री चौहान ने केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करने के



लिए हर महीने वचु'अल समीक्षा बैठकें आयोजित करने की बात कही। रबी अभियान की पूर्व तैयारी के लिए हर वर्ष 10 सितंबर को जिला और 17 सितंबर को राज्य स्तर पर बैठक आयोजित करने का कैलेंडर भी तय किया गया है। खरीफ के लिए यही बैठकें 10 और 17 मई को होंगी। मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के लिए 22 अक्टूबर से 30 नवंबर 2026 तक देशव्यापी 'खेत बचाओ अभियान' चलाने का आह्वान किया गया। अभियान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग, वैज्ञानिकों की

भागीदारी और किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन देने पर जोर रहेगा। श्री चौहान ने राज्यों को नकली खाद, नकली बीज और अमानक कीटनाशकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। प्राकृतिक खेती, एकीकृत कृषि प्रणाली और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने की बात कही गई। श्री चौहान ने उपज का बेहतर मूल्य दिलाने के लिए पोस्ट हार्वेस्ट प्रबंधन, वैज्ञानिक भंडारण और बाजार व्यवस्था मजबूत करने की बात कही। सम्मेलन में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर और भागीरथ चौधरी, कृषि सचिव अतीश चंद्रा, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट सहित केंद्र एवं राज्यों के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक और कृषि संस्थानों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

पैराक्वाट डायक्लोराइड प्रतिबंधित

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने खरपतवारनाशक पैराक्वाट डायक्लोराइड को तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर दिया है। कीटनाशक अधिनियम 1968 के तहत सरकार ने इसके निर्माण, भंडारण, विक्रय एवं आयात को पूरी तरह से रोक दिया है। सरकार की ओर से गठित विशेषज्ञ एवं पंजीकरण समिति की सिफारिश के पश्चात केन्द्र सरकार ने यह निर्णय लिया है। समिति ने अपनी सिफारिश में पैराक्वाट डायक्लोराइड को मनुष्यों एवं पशुओं के लिये नुकसानदायक बताया है। केन्द्र ने इस संबंध में 22 सितंबर 26 को पत्र जारी करके सभी राज्यों से अमल करने को निर्देशित किया है। उल्लेखनीय है कि पैराक्वाट डायक्लोराइड का सर्वाधिक उपयोग कृषि में खरपतवारनाशक के रूप में किया जाता रहा है।

उम्मीद से
ज्यादा का वादा

50
HP

Chetak DI 65 (4WD)

4

सिलिण्डर का
4088 CC
दमदार इंजन

**ACE
TRACTORS**

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 CC का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हेवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre



**दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस**



हर कदम हर डगर

ACE TRACTORS

हर किसान का हमसफर

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 CC का दमदार इंजन
- ऑयल बैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

100%
Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

**कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004**

अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेन्स उपलब्ध

रित्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

साप्ताहिक सुविचार

तप ही परम कल्याण का साधन है। दूसरे सारे सुख तो अज्ञात मात्र है।
- वाल्मीकि

चुनौतीपूर्ण रबी फसलों का उत्पादन

इस साल मध्यप्रदेश के किसानों के लिए रबी फसलों का उत्पादन अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है। प्रदेश में जैसे तो इस वर्ष मौसम विभाग के अनुसार सामान्य वर्षा हुई लेकिन अधिकांश क्षेत्रों में औसत बारिश कम हुई है। विशेषकर पश्चिमी क्षेत्र जिसमें उज्जैन एवं इंदौर संभाग आता है, बारिश कम हुई है। इस क्षेत्र में जैसे भी रबी मौसम में अधिकांशतः गेहूं की खेती की जाती है। गेहूं की फसल के लिये कम से कम चार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इस साल की बारिश को देखते हुये गेहूं की सिंचाई के लिए चार बार पानी की व्यवस्था मुश्किल लग रही है। हाल ही में इंदौर संभाग की रबी कार्य योजना बैठक में दहलनी फसलों को प्राथमिकता देने की सलाह दी गई है। अब इस

सलाह को किसान कितना अंगीकार करते हैं ये तो आने वाले वक्त में पता चलेगा। एक बात

का उल्लेख करना जरूरी है कि इस साल प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में कम बारिश होने से भूमि का जल स्तर और कम हो गया है। जैसे भी मालवा एवं निमाड जमीनी जल स्तर के मामले में हमेशा से पीछे रहे हैं। मोक्षदायिनी नर्मदा नदी के बीच में ये क्षेत्र जल स्तर के मामले में कभी आत्मनिर्भर नहीं रहा। यही वजह है कि पूरे क्षेत्र में खरीफ में धान के स्थान पर कपास, मक्का एवं सोयाबीन की खेती बहुतायत रूप में की जाती है।

क्षेत्र में उपलब्ध पानी के आधार पर किसानों को रबी फसलें बोने की सलाह दी जानी चाहिए। कम पानी वाली गेहूं की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध कराना होगा। भौगोलिक स्थिति के आधार पर दलहन की एवं तिलहनी फसलों को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। दलहन फसलों में विशेष रूप से चना, मसूर, मटर इत्यादि बोने की सलाह किसानों को देना चाहिए। तिलहनी फसलों में सरसो एवं अलसी लाभदायक साबित हो सकती है।

जिन क्षेत्रों में सिंचाई के लिए बांध हैं उसका पानी समुचित ढंग से उपयोग किया जाना आवश्यक है। नहरों की मरम्मत एवं नालियों का रख-रखाव समय पूर्व करके सिंचाई जल का समुचित उपयोग होना चाहिए। जिन किसानों के पास स्वयं का सिंचाई साधन जैसे ट्यूबवेल, कुआं, तालाब इत्यादि है उसके लिये बिजली आपूर्ति नियमित रूप से किया जाना जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में खराब एवं बिगड़े हुए ट्रांसफार्मर्स को समय पूर्व ठीक किया जाना चाहिए ताकि विद्युत आपूर्ति में बाधा न आये। जिन जिलों में बारिश अच्छी हुई है एवं खेतों में पर्याप्त नमी है, उसका लाभ रबी फसलों की बुवाई में लेना चाहिए। सरकार की ये जिम्मेदारी है कि रबी सीजन के लिये पर्याप्त मात्रा में बीज एवं उर्वरक इत्यादि का प्रबंध समय रहते किया जाये। किसानों को उन्नत तकनीकी एवं वर्तमान जरूरत की सलाह कृषि विभाग द्वारा नियमित रूप से देना चाहिए।

अल्प वर्षा में रबी फसलों के लिए कम पानी वाली किस्मों का चयन जरूरी: श्री सिंह

धार। अल्प वर्षा की स्थिति को देखते हुए रबी 2026-27 की तैयारियों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, धार में उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संभाग के संयुक्त संचालक कृषि जितेन्द्र सिंह ने की। इसमें धार, तिरला, नालछा, सरदारपुर और बदनावर विकासखंडों के 100 से अधिक कृषि अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए।

इस अवसर पर संयुक्त संचालक श्री सिंह ने कहा कि अल्प वर्षा एवं अल-नीनो के संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए किसानों को कम पानी में बेहतर उत्पादन देने वाली फसलों और उन्नत किस्मों के चयन के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने चना, मसूर, सरसों और चिया जैसी कम



पानी में बेहतर उत्पादन देने वाली फसलों को बढ़ावा देने तथा फसल विविधीकरण अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने अधिकारियों को किसानों को संतुलित उर्वरक उपयोग के प्रति जागरूक करने के साथ ई-विकास प्रणाली के माध्यम से उर्वरक उपलब्धता की जानकारी देने के निर्देश दिए। उप संचालक कृषि विजय चौरसिया

ने सीमित जल के दक्ष उपयोग के लिए ड्रिप, स्प्रिंकलर और मिनी स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने पात्र किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ लेने के लिए प्रेरित करने के निर्देश भी दिए। परियोजना संचालक आत्मा करण सिंह झणिया ने प्राकृतिक खेती की तकनीकों

और लाभों की जानकारी दी। कृषि वैज्ञानिक डी.एस. मंडलोई ने कम पानी और कम अवधि में तैयार होने वाली सब्जी फसलों को बढ़ावा देने की बात कही। कार्यक्रम में विकासखंडवार कम पानी वाली फसलों, उपयुक्त बीज एवं उन्नत किस्मों के चयन तथा किसानों तक तकनीकी जानकारी पहुंचाने को लेकर अधिकारियों को मार्गदर्शन दिया गया। इस दौरान संयुक्त संचालक श्री सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्र धार में संचालित कृषि गतिविधियों वर्मी कंपोस्टिंग यूनिट, बायो रिसोर्स सेंटर, मशरूम उत्पादन यूनिट, कड़कनाथ मुर्गे की उत्पादन यूनिट, गौशाला, उद्यानिकी यूनिट एवं जैविक खेती के प्रदर्शन फील्ड का निरीक्षण किया।

क्लस्टर प्रदर्शन अंतर्गत तिलहन प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन



रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र जावरा रतलाम द्वारा ग्राम कालूखेड़ा, तहसील पिपलौदा, जिला रतलाम में राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन के अंतर्गत भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर द्वारा प्रदायित क्लस्टर प्रदर्शन (तिलहन) फसल सोयाबीन, किस्म- आर.वी.एस.एम. 2011-35 पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया।

प्रक्षेत्र दिवस के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख ने केंद्र पर संचालित गतिविधियों के बारे में कृषकों को अवगत करवाया एवं प्रक्षेत्र दिवस के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए सोयाबीन में जैव उर्वरकों के महत्व एवं उनके उपयोग करने के बारे में जानकारी प्रदान की। साथ ही कटाई उपरांत बीज को भण्डारण कर अगले वर्ष बीज में उपयोग लेने के लिए कृषकों को प्रेरित

किया। क्लस्टर प्रदर्शन (तिलहन) प्रभारी डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप तिवारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध संरक्षण) ने सोयाबीन की उक्त प्रजाति की विशेषताओं एवं इसमें लगने वाली कीट एवं व्याधियों के निदान के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में केवीके के डॉ. बरखा शर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), डॉ. चतरा राम कांटावा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान), डॉ. रामधन घसवा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि प्रसार), डॉ. रोहताश सिंह भदौरिया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी), डॉ. शिशिराम जाखड़, कार्यक्रम सहायक (मृदा विज्ञान) मनोज कुमार रजक, दीपक विश्वकर्मा, रामनारायण जाट, मुकेश कारीगर, जितेन्द्र सरगरा एवं आदित्य प्रताप राठौर के साथ ही ग्राम कालूखेड़ा, तालीदाना, भाटखेड़ी एवं सेमलिया के 38 कृषकों ने भाग लिया।

नवागत उप संचालक कृषि श्री यादव का स्वागत

शाजापुर। जिले के नवागत उप संचालक कृषि नितेश कुमार यादव का विगत दिनों स्वागत किया गया। कृषि आदान विक्रेता संघ शाजापुर के पदाधिकारियों ने श्री यादव का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। इस अवसर पर खेतान केमिकल्स के आर.एन. गोठी, कृषि आदान विक्रेता संघ उज्जैन संभाग के प्रचार मंत्री सुनील नाहर एवं रामस्वरूप पाटीदार उपस्थित थे।



अनमोल वचन

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।
- स्वामी शंकराचार्य

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार			
आश्विन कृष्ण / आश्विन शुक्ल विक्रम संवत् 2083 ईस्वी सन् 2026			
दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
06 अक्टूबर 26	मंगलवार	आश्विन कृष्ण 11	
07 अक्टूबर 26	बुधवार	आश्विन कृष्ण 12	
08 अक्टूबर 26	गुरुवार	आश्विन कृष्ण 13	प्रदोष व्रत
09 अक्टूबर 26	शुक्रवार	आश्विन कृष्ण 14	प्रदोष व्रत
10 अक्टूबर 26	शनिवार	आश्विन कृष्ण 30	पितृमोक्ष अमावस्या
11 अक्टूबर 26	रविवार	आश्विन शुक्ल 1	नवरात्रारंभ
12 अक्टूबर 26	सोमवार	आश्विन शुक्ल 2	
13 अक्टूबर 26	मंगलवार	आश्विन शुक्ल 3	
14 अक्टूबर 26	बुधवार	आश्विन शुक्ल 4	
15 अक्टूबर 26	गुरुवार	आश्विन शुक्ल 5	
16 अक्टूबर 26	शुक्रवार	आश्विन शुक्ल 6	
17 अक्टूबर 26	शनिवार	आश्विन शुक्ल 7	
18 अक्टूबर 26	रविवार	आश्विन शुक्ल 8	
19 अक्टूबर 26	सोमवार	आश्विन शुक्ल 9	दुर्गाष्टमी

- डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

दे श के अधिकांश क्षेत्रों में मुख्यतः संकर धान और देशी किस्में लगाई जाती हैं। धान में प्रमुख रूप से झुलसा एवं कंडवा रोग की शिकायत बहुतायत से मिल रही है। इससे किसानों को धान के उत्पादन में भी नुकसान की आशंका बन गई है। धान के प्रमुख रोगों का विवरण निम्नानुसार है।

धान का झुलसा रोग (ब्लास्ट)

पायरीकुलेरिया ओरिजे नामक फफूंद से होता है। इसका आक्रमण सर्वप्रथम बोनी की आवस्था में अथवा कल्ले निकलने के समय पत्तियों तथा तनों की गांठों पर होता है। बाद में बाल निकलने पर बालों में इसका आक्रमण होता है। बालों में आक्रमण होने पर अधिक नुकसान होता है जबकि पत्तियों पर आक्रमण से अप्रत्यक्ष नुकसान होता है।

- लक्षण :** पत्तियों के ऊपर प्रारम्भ में छोटे-छोटे कथई रंग के आंखनुमा धब्बे बनते हैं। बाद में यह धब्बे बड़े होकर तकुए के आकार के हो जाते हैं। धब्बे के बीच का भाग राखिले रंग का होता है। कई धब्बे मिलकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। दूसरी अवस्था में इस रोग का आक्रमण तने की गांठों पर होता है जिससे गांठें भूरी-काली हो जाती हैं। पौधों का वजन बढ़ने पर गांठों से पौधे टूट जाते हैं। बालें सूखी निकलती हैं। तीसरी अवस्था में इसका आक्रमण बालों की गर्दन पर होता है। बालों की गर्दन पर भूरी कथई सड़न हो जाती है। बाल निकलते समय आक्रमण हुआ तो बाल सूख जाती है। देर से आक्रमण होने पर बालों में दाने ठीक से न भरने पर बाल हल्की रह जाती है और अधभरे दाने मिलिंग में टूट जाते हैं। यह रोग 20 से 25 सेन्टीग्रेड तापमान से नीचे वातावरण में 85-95 प्रतिशत नमी की अवस्था में अधिक होता है। अधिक नाइट्रोजन के उपयोग से भी यह रोग बढ़ता है।

प्रबंधन

- बौनी किस्में या संकर प्रजातियों का उपयोग करें।
- ब्लास्ट अवरोधी किस्मों जैसे पंकज, जमुना, सरजु 52, आकाशी, आई.आर.36, आई.आर. 64 और पंत धान 10 आदि का प्रयोग करें।
- नत्रजन, स्फुर के साथ पोटाश तथा सूक्ष्म पोषक तत्व सिलिश का प्रयोग संतुलित मात्रा में करें।
- नर्सरी अवस्था में स्यूडोमोनास+ट्राइकोडर्मा 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें।
- इस रोग को कम करने के लिये सिलिका वाली खाद जैसे कैल्शियम सिलिकेट का प्रयोग करें।
- हिनोसान या किटाजिंग (0.1 प्रतिशत) का घोल बनाकर पत्तियों और बालों के निकलते समय 10-12 दिन बाद पुनः एक छिड़काव करें।

धान का कंडवा रोग

धान की पत्तियों और दानों में कंडवा रोग का आक्रमण होता है। पत्तियों पर आक्रमण कभी-कभी होता है किन्तु दानों में आक्रमण अधिक देखा गया है। पत्तियों का और दानों का कंडवा अलग-अलग तरह की फफूंदों से होता है। दानों पर भी दो तरह की अलग-अलग फफूंदों का प्रकोप देखा जाता है। दानों के कंडवा के दो प्रकार इस तरह हैं।

- बंट रोग :** टिलेटिया वरक्लेयाना फफूंद से होता है। इस रोग में ऊपर से दानों का छिलका (भूसी) सामान्य दिखती है। किन्तु दो छिलकों के बीच दरारों में थोड़ा कालापन दिखता है। जब छिलका हटाते हैं तो चावल की जगह काला पाउडर भरा रहता है।
- फाल्स स्मट (आभासी कंडवा) :** अष्टिलेजिनाइडया वाइरेन्स फफूंद से होता है। इसे आभासी कंडवा (फाल्स स्मट) कहते हैं।
- लक्षण :** आभासी कंडवा का आक्रमण पिछली फसल के पड़े अवशेषों के माध्यम से मिट्टी में मौजूद फफूंद बीजों से होता है। बाल निकलते ही इसका आक्रमण बालों के



धान की फसल को कीट रोगों से बचायें

मध्य अधिक होता है। इसके कारण छिलकों के अंदर का चावल कंडवा की गोल बड़ी आकृति में बदल जाता है। जैसे धान का या मक्का का फूटा होता है। इस गोल आकृति के ऊपर पीला या काला पाउडर जमा हो जाता है। बहले यह एक पतली झिल्ली से ढंका रहता है बाद में झिल्ली फटने से पाउडर बाहर दिखता है। इससे स्केरोशिमा बनते हैं। यही बाल नीचे गिरकर अगले वर्ष रोग फैलाते में सहायक होते हैं। पाउडर, उड़कर अन्य बालों पर चला जाता है और चावल को फूटा में बदल देता है। जिस वर्ष अधिक वर्षा और धान की अच्छी फसल होती है उस समय अधिक होता है। दूर से देखने पर रोग बहुत दिखता है किन्तु यदि पूरे खेत का औसत आक्रमण की गणना की जाये तो पौधों के अनुसार लगभग 2-3 प्रतिशत किन्तु बालों में आक्रमण का प्रतिशत 7-8 प्रतिशत, दानों का अप्रत्यक्ष नुकसान 14-16 प्रतिशत तक किस्म के अनुसार देखा गया है।

- हानि के प्रकार :** बालों में आक्रमण पर इससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष नुकसान होता है। प्रत्यक्ष नुकसान में दाने ही कंडवा गोलों में बदलने से तथा अप्रत्यक्ष नुकसान दानों में बदरा (पोचापन) से होता है। अनुसंधान में पाया गया है कि अप्रत्यक्ष नुकसान बालों पर गोलों की संख्या पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे कंडवा गोलों की संख्या बढ़ती है वैसे-वैसे पोचापन अधिक होता जाता है। क्योंकि यह गोले पौधों के भोजन को अपनी ओर खींच लेते हैं। लेखक द्वारा किये गये अनुसंधान में कुछ किस्मों में एक बाली में लगभग 25-30 दाने रोगग्रस्त पाये गये जिससे उस बाली में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नुकसान 60-65 प्रतिशत तक था।

प्रबंधन

- रोग अवरोधी किस्मों को लगाना चाहिये।
- गर्मी में खेत की जुताई करना चाहिये।
- रोगग्रस्त बालियों को इकट्ठा करके जमीन में गहराई में गाड़ना चाहिये।
- उर्वरकों का संतुलित मात्रा में नत्रजन-स्फुर-पोटाश का उपयोग करना चाहिये।
- पौधों के बाल निकलते समय ही प्रोपियोकोनाजोल का 0.1 प्रतिशत घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
- 10-12 दिन के बाद छिड़काव दुहराना चाहिये।

धान का भूरा धब्बा रोग

हेलमिंथोस्पोरियम ओशयजी नामक फफूंद के कारण होता है। 1942 में बंगाल में अकाल का प्रमुख कारण यह धान का भूरा धब्बा रोग ही था। इस रोग के लिए सापेक्ष आर्द्रता 80 प्रतिशत के ऊपर साथ ही तापमान 25-30 डिग्री से. बेहद अनुकूल होती है। अधिक नाइट्रोजन इस रोग की गंभीरता को बढ़ाती है।

- लक्षण :** नर्सरी अवस्था में रोग देखा जा सकता है। प्रांकुरचोल पर छोटे-छोटे धब्बों के रूप में दिखाई देती है जिसमें धब्बों का रंग गहरा भूरा हो जाता है तथा अंत में पत्तियां भूरी होकर सूख जाती है। अगर यह रोग बालियां निकालने के पहले आती है तो बालियां निकल नहीं पाती और अगर रोग बालियां निकलने के बाद आती है तो बालियां विकसित नहीं हो पाती तथा विकृत हो जाती है।

प्रबंधन

- रोग अवरोधी किस्में जैसे बाला, कृष्णा, कुसुमा, कावेरी, जगन्नाथ और आईआर 36, 42 आदि किस्मों का उपयोग करें।
- बीज का उपचार कार्बोक्सीन+थीरम से 3-4 ग्राम/किलो बीज दर से करें।
- धान के संक्रमित पौधे को अलग कर नष्ट कर देना चाहिए।
- नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग उचित मात्रा में ही करना चाहिए।
- ट्राईसाईकलाजोल 18 प्रतिशत+मेन्कोजेब 62 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 400-500 ग्राम/180 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें।
- खड़ी फसल में मैन्कोजेब+कार्बेन्डाजिम (0.25 प्रतिशत) की दर से छिड़काव 15 दिनों के अन्तर पर करें।

जीवाणुज पत्ती अंगमारी रोग (जीवाणुज पर्ण झुलसा रोग)

यह रोग जैन्थोमोनास ओराइजी पी.बी. ओराइजी नामक जीवाणु से होता है। भारत वर्ष में यह रोग सबसे गंभीर समस्या है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

देश का आविष्कार, देश में बना, देश के किसानों को समर्पित

इफको नैनो उर्वरकों का वादा

उपज अधिक और लाभ ज्यादा

इफको नैनो यूरिया तरल

FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक

- एक बोतल एक बोरी यूरिया के बराबर
- उत्पादन में वृद्धि
- उपज की गुणवत्ता में सुधार
- सुरक्षित एवं हानिरहित
- परिवहन एवं भंडारण सरल में कमी
- जल, वायु एवं मृदा प्रदूषण में कमी
- सभी प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त
- उपयोग में आसानी

500 मिली बोतल मात्र **₹225/-** से

100 मिली बोतल मात्र **₹22.5/-** से

इफको नैनो डीएपी तरल

FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक

- फसल उत्पादकता और गुणवत्ता में वृद्धि
- बीजों का अंकुरण बढ़ाए
- भंडारण और परिवहन में आसानी
- किसान की आय बढ़ाता है
- जड़ विकास में सुधार करता है
- शाखाएं और फूलों की संख्या एवं पौधों की अधिक वृद्धि

500 मिली बोतल मात्र **₹600/-** से

100 मिली बोतल मात्र **₹60/-** से

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड, रायपुर, (छ.ग.)

शहडोल। जिले के मझगवां गांव के सलैया टोला में रहने वाले आदिवासी परिवारों के लिए अनाज सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि उनकी पीढ़ियों की पहचान, परंपरा और खुशियों का आधार है। घर की कोठरियों में सहेजे गए छोटे-छोटे बीज उनके लिए किसी खजाने से कम नहीं हैं। इन्हीं बीजों से खेतों में फसल लहलहाती है, घर में अनाज आता है और पूरे परिवार की जरूरतें पूरी होती हैं। आज जब खेती में आधुनिक और हाइब्रिड किस्मों का चलन बढ़ रहा है, वहीं मझगवां के बैगा एवं भूमिया समाज के किसान अपनी पुरानी देसी किस्मों को आज भी संजोए हुए हैं। झोलार, बांसपोर, ठर्री, सरैया, गुरमटिया, करन फूल और भेजरी जैसी पारंपरिक धान की किस्में यहां के खेतों में आज भी दिखाई देती हैं। इसी तरह लेदरी कोदो, बासिन कोदो, कोदेली कोदो, बेमेरहा कुटकी, जाली कुटकी, छोटाही कुटकी, भदेली कुटकी, कागुन, समा और मिलो जैसे श्री अन्न भी यहां की खेती और भोजन का हिस्सा हैं।

भोल्ली सिंह के लिए बीज ही असली पूंजी: मझगवां के किसान भोल्ली सिंह ने अपने खेतों में कई पारंपरिक फसलों को बचाकर रखा है। उनके खेत में झोलार धान, बांसपोर, सरैया, गुरमटिया, करन फूल और भेजरी जैसी देसी धान की किस्में हैं। साथ ही कोदो, मक्का, मिलो, कागुन, कुटकी, लेदरी कोदो और बासिन

बीजों की कोठरी में सहेजी है पीढ़ियों की खुशहाली मझगवां के आदिवासी परिवारों ने बचाकर रखी देसी अनाज की विरासत

कोदो भी उगाए जाते हैं। भोल्ली सिंह के लिए इन फसलों की खुशी सिर्फ अच्छी पैदावार तक सीमित नहीं है। जब खेत से अनाज घर आता है और परिवार के भोजन में शामिल होता है, तो उन्हें अपनी मेहनत सफल होने का एहसास होता है। वे बताते हैं कि मोटा अनाज उनके रोजमर्रा के भोजन का हिस्सा है। उनका कहना है कि 60 वर्ष से अधिक उम्र में भी वे 20 से 25 किलोमीटर तक साइकिल चला लेते हैं और पारंपरिक भोजन को अपनी तंदुरुस्ती से जोड़कर देखते हैं।

बिरमतिया बैगा के लिए देसी बीज, अपनी पहचान और अपनी परंपरा: मझगवां के सलैया टोला की बिरमतिया बैगा ने भी अपने खेतों में पारंपरिक अनाज और धान की कई किस्मों को सुरक्षित रखा है। उनके खेत में समा, कुटकी, सिकिया, काकुन, सरैया और ठर्री धान जैसी फसलें उगाई जाती हैं। अलग-अलग मौसम में इन फसलों की खेती करना और उनसे प्राप्त अनाज को सुरक्षित रखना उनके परिवार की पुरानी परंपरा का हिस्सा है।

बिरमतिया बैगा के लिए खेत में उगने वाला हर अनाज केवल फसल नहीं है। उसके साथ उनके परिवार की यादें, पुरखों की खेती की पद्धति और



वर्षों से चली आ रही खाद्य परंपरा जुड़ी हुई है। वे पुराने बीजों को संभालकर रखती हैं, ताकि अगली फसल के समय इन्हीं बीजों से फिर खेती की जा सके। इस तरह एक मौसम की फसल अगले मौसम के लिए बीज बन जाती है और पीढ़ियों से चली आ रही यह परंपरा आगे बढ़ती रहती है। वे बताती हैं कि घर में सुरक्षित रखा अनाज परिवार के भोजन में उपयोग होता है। खेत से निकला अपना धान और मोटा अनाज जब घर की रसोई तक पहुंचता है तो उसमें मेहनत के साथ अपनेपन का एहसास भी जुड़ा होता है। समा, कुटकी, सिकिया और काकुन जैसे अनाज उनके भोजन का हिस्सा हैं, वहीं सरैया और ठर्री जैसे पारंपरिक धान की किस्में उनकी खेती की विविधता को बनाए रखती हैं। बिरमतिया के लिए पुराने बीजों को बचाकर रखना अपनी परंपरा को बचाकर रखने जैसा है। उनका मानना है कि इन बीजों की पहचान गांव के खेतों और परिवारों से जुड़ी है। इसलिए उन्हें

सुरक्षित रखना जरूरी है, ताकि आने वाले समय में भी इन पारंपरिक फसलों की खेती होती रहे और नई पीढ़ी इन अनाजों के बारे में जान सके। उनके घर में रखे बीजों की यह छोटी-सी दुनिया इस बात की गवाही देती है कि मझगवां के आदिवासी परिवारों ने आधुनिक खेती के दौर में भी अपनी पारंपरिक फसलों के लिए जगह बनाए रखी है। बिरमतिया के लिए इन बीजों की सबसे बड़ी खुशी यही है कि वे आज भी खेत में बोए जाते हैं, फसल बनकर घर आते हैं और परिवार के भोजन का हिस्सा बनते हैं।

धनवतिया बैगा ने संभाल रखी है बीजों की विरासत: धनवतिया बैगा भी देसी अनाज की खेती और बीज संरक्षण से जुड़ी हैं। उनके खेत में झुंझरु, पैलहाई, बरबट्टी, मक्का, कोदो, कुटकी, कागुन, भदेली कुटकी और सऊटहा कुटकी जैसी फसलें हैं। जब उनसे इन फसलों के बीजों के बारे में पूछा जाता है तो उनका सहज जवाब होता है कि बीज मिल जाएंगे और जो यहां न मिलें, वे आसपास के पहाड़ी गांवों में मिल जाएंगे। यह जवाब बताता है कि यहां बीजों का संरक्षण केवल एक परिवार तक सीमित नहीं, बल्कि गांव और आसपास के समुदाय की साझा परंपरा है।

सालभर का अनाज, सालभर की निश्चिंतता: इन परिवारों की खुशियों का एक बड़ा कारण उनकी खाद्य आत्मनिर्भरता भी है। वे खेतों में उगाए गए अलग-अलग अनाज को घर में सुरक्षित रखते हैं और सालभर उसका उपयोग करते हैं। धान की देसी किस्म हो या कोदो-कुटकी, कागुन या समा—इनका उपयोग परिवार के भोजन में होता है। फसल घर आने के बाद कोठरी में अनाज का सुरक्षित होना इन परिवारों के लिए आने वाले दिनों की निश्चिंतता भी है। मेहनत से उगाया अपना अनाज, अपने घर का भोजन और अपने ही सुरक्षित किए बीज—यही उनकी खुशहाल जिंदगी की सरल कहानी है।

पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा को आगे बढ़ा रहे किसान: कृषि वैज्ञानिक डॉ. बी.के. प्रजापति के अनुसार मझगवां क्षेत्र के बैगा और भूमिया समाज के किसान प्राचीन काल से मोटे अनाज और पारंपरिक फसलों की खेती करते आ रहे हैं। इन किसानों ने कई पुरानी किस्मों के बीजों को आज भी सुरक्षित रखा है। मझगवां के किसानों की यह पहल केवल खेती नहीं, बल्कि पारंपरिक कृषि ज्ञान और जैव विविधता को आगे बढ़ाने का माध्यम भी है। उनके घरों की कोठरियों में रखे ये बीज आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक ऐसी विरासत हैं, जिसे उन्होंने मेहनत, विश्वास और अपनी परंपरा से संभालकर रखा है।

नव वर्ष पर शुभचिंतकों, मित्रों एवं प्रिय ग्राहकों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2027



कृषक दूत डायरी 2027 के प्रमुख आकर्षण

- ◀ केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि एवं अन्य योजनाओं की जानकारी।
- ◀ प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- ◀ तहसील विकासखंड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- ◀ फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय।
- ◀ माहवार कैलेंडर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।

कृषक दूत
की सदस्यता
लेकर
डायरी
मुफ्त पायें

अब नए **आकर्षक आकार** में

संपर्क करें ➡ **कृषक दूत**

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824 मो. : 9300754675, 9827352535, 9425013875
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in | Website : www.krishakdoot.org

- डॉ. एस.के. त्यागी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, खरगोन (म.प्र.)

श

रद कालीन सब्जियों में फूलगोभी का प्रमुख स्थान है। यह एक स्वादिष्ट तथा लोक-प्रिय सब्जी है। फूलगोभी से सब्जी, अचार और एकोड़े बनाये जाते हैं फूलगोभी में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन “ए” तथा “सी” पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

जलवायु - फूलगोभी के लिए ठण्डी और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। फूल तैयार होने के समय तापमान अधिक होने पर फूल छितरे, पत्तेदार और पीले रंग के हो जाते हैं।

मृदा - फूलगोभी की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, किन्तु गहरी दोमट मृदा जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो इसकी खेती के लिए अच्छी होती है।

उन्नत किस्में

पूसा अगेती - यह खेप तैयार होने वाली (90-100) किस्म है। मई-जून में बीज बोए जाते हैं और सितम्बर-अक्टूबर में फूल कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर लगभग 80-100 क्विंटल तक पैदावार मिल जाती है।

पूसा दीपाली - यह भी खेप तैयार होने वाली (100 दिन) किस्म है। फूल मध्यम आकार के सफेद तथा ठोस होते हैं। जो कि मध्य अक्टूबर से कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर 100 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल-1 - यह संकरण द्वारा विकसित किस्म है फूल सफेद, ठोस और मध्यम आकार के होते हैं। पिछेती किस्म होने के कारण इसे उत्तरी भारत में अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के अन्त तक रोपाई की जा सकती है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल उत्पादन प्रति हेक्टेयर मिल जाता है।

पूसा स्नोबॉल-2 - इस किस्म को चयन द्वारा विकसित किया गया है। फूल सफेद एवं ठोस होता है। फूलों की भण्डारण क्षमता अधिक होती है। यह किस्म अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के मध्य तक रोपाई के लिए उपयुक्त है। प्रति हेक्टेयर 150-200 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल के-1 - इस किस्म का विकास भी चयन द्वारा किया गया है। फूल सफेद, ठोस और उत्तम भण्डारण क्षमता वाले होते हैं। इस किस्म की रोपाई अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के मध्य तक की जाती है। यह किस्म ब्लैक रॉट नामक रोग के लिए प्रतिरोधी है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जाती है।

खाद एवं उर्वरक - फूल गोभी की अधिक पैदावार लेने के लिए खाद और उर्वरक दोनों का समुचित मात्रा में और सही समय पर इस्तेमाल करना नितान्त आवश्यक है। गोबर की खाद 250 क्विंटल, नत्रजन 100 किलो, स्फुर 75 किलो तथा पोटाष 40 किलो प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। गोबर की खाद खेत तैयार करते समय स्फुर तथा पोटाश पौध रोपण के पहले तथा



फूल गोभी की उन्नत खेती

नाइट्रोजन दो भागों में क्रमशः रोपाई के 10-15 दिन तथा 25-30 दिन बाद देना चाहिए।

बीज की मात्रा - एक हेक्टेयर के लिए 650-750 ग्राम बीज पर्याप्त होता है।

पौध तैयार करना - उचित आकार की सामान्यतया 21 मीटर आकार की 10-15 सेमी ऊंची क्यारी बनाकर बीज कतारों में बोना चाहिए। पौधे क्यारियों में जब 4-6 सप्ताह हो जायें तब खेत में लगाना चाहिए।

रोपाई - रोपाई की दूरी भूमि की उर्वरता तथा मौसम के ऊपर निर्भर करती है। शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों को कतार से कतार 45 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी तथा मध्यम एवं देर से तैयार होने वाली किस्मों के लिए कतार से कतार 60 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखनी चाहिए।

सिंचाई- पौध रोपने के तुरंत बाद सिंचाई करें। सामान्यतः 10-15 दिन के अन्तर से सिंचाई करना चाहिए।

निराई-गुड़ाई - फूलगोभी की फसल के साथ उगे खरपतवारों की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहे, अधिक गहरी गुड़ाई न करें।

ब्लांचिंग - फूल का रंग आकर्षक सफेद बनाने के लिए, पौधे की चारों ओर फैली हुई पत्तियों को फूल के ऊपर समेटकर बांध देने को ब्लांचिंग कहते हैं। यह क्रिया फूल तैयार होने के 8-10 दिन पूर्व की जानी चाहिए।

कटाई - जब फल पूर्ण रूप से विकसित हो जाय तब काट लेना चाहिए। काटते समय यह ध्यान रखें कि फूल में खरोंच या रगड़ न लगने पायें।

उपज - एक हेक्टेयर से 200-250 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पौध संरक्षण कीट नियंत्रण

कैबेज बोरर - यह इल्ली पत्तियों में छेद कर खा जाती है। जिसके कारण पौधे सूख जाते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए इण्डोसल्फान की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

माहो - यह कीट पत्तियों और पौधे के अन्य कोमल भागों का रस चूसता है, जिसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए डायमिथेट 30 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। मैगट पौधे के

मध्य भाग को खाते हैं। जिससे तने का आन्तरिक भाग सड़ जाता है। तना खोखला हो जाता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए ट्रायजोफास 40 ईसी की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

डायमण्ड ब्लैक माथ - यह कीट पत्तियों को खाता है तथा पत्तियों में ही अण्डे देती है। इस कीट के पंख हरे के समान होते हैं इस कीट के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी की 2 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग एवं उनकी रोकथाम

आर्द्रगलन - इस रोग में पौधशाला में पौधों का तना नीचे से गल जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए 0.1 प्रतिशत फाइटोलान से भूमि उपचार करें।

काला विगलन - इस रोग में रोगी पौधों की पत्तियों पर अंग्रेजी के बी आकार के भूरे या पीले रंग के धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। डंठल या जड़ के भीतरी भाग काले पड़ जाते हैं। पत्ते धीरे-धीरे पीले पड़कर सूख जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए बीज को 50 सेल्सियस गर्म पानी में 30 मिनट तक डुबोयें तथा बीज को बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बटनिंग या बोल्टिंग - इसमें फूलों के पकने से पूर्व ही फूल छोटे रहकर फटने लगते हैं और पौधों का विकास भी सामान्य नहीं होता है। अगेती जातियों को देर से बोने पर यह समस्या आती है। अतः विभिन्न किस्मों की नर्सरी में समय से बुवाई व खेत में रोपाई करें।

व्हिप टेल - अम्लीय भूमि में पौधों को मोलीब्डेनम पर्याप्त न मिलने के कारण पत्र-दल का उचित विकास न होकर केवल मध्य शिरा का ही विकास होता है। इसके नियंत्रण के लिए भूमि में एक किलोग्राम अमोनियम मोलीब्डेट प्रति हेक्टेयर की दर से मिलायें।

नोट - सभी प्रकार के कीटों के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

विकसित भारत 2047

माँ दंतेश्वरी हर्बल फार्मर्स एंड रिसर्च सेंटर

MAAP-16 Registered Variety

आपकी जमीन

आपका अगला बड़ा निवेश बन सकती है।

एक स्मार्ट प्लांटेशन मॉडल, जो दे नियमित आय और दीर्घकालिक संपत्ति का मूल्य।

एक स्मार्ट प्लांटेशन मॉडल NGH (Registered)

ऑस्ट्रेलियन टीक

800 पौधे प्रति एकड़

काली मिर्च

800 पौधे प्रति एकड़

एक साल में (प्रति एकड़) रिटर्न

काली मिर्च (ब्लैक पेपर) का रिटर्न

₹8 से ₹15 लाख

प्रति एकड़

10 साल बाद (प्रति एकड़) रिटर्न

काली मिर्च (ब्लैक पेपर)	ऑस्ट्रेलियन टीक	कुल रिटर्न 10 साल बाद
₹80 लाख से ₹1.5 करोड़ तक	₹2 करोड़ से ₹3 करोड़ तक	₹3 करोड़ से ₹4.5 करोड़ तक

लगभग लागत (प्रति एकड़)

ऑस्ट्रेलियन टीक की लागत	काली मिर्च की लागत	मैटेनेंस, अन्य खर्च आदि सहित लगभग कुल लागत
₹1.12 लाख	₹1.12 लाख	₹3 लाख

हमारा प्लांटेशन और उत्पादन चक्र

पहले हम ऑस्ट्रेलियन टीक लगाते हैं।

6 महीने से 1 साल बाद हम ब्लैक पेपर (काली मिर्च) लगाते हैं।

2.5 से 3 साल बाद ब्लैक पेपर उत्पादन देना शुरू कर देता है।

प्रति काली मिर्च पेड़ 6 से 7 किलो ब्लैक पेपर फ्रुटिंग (वार्षिक)

काली मिर्च 12 महीना इसका मांग रहता है।

हमेशा demand supply से ज्यादा रहता है।

एक ऑस्ट्रेलियन टीक 10 से 35 CFT का होता है।

यह वैज्ञानिक मॉडल देश के Society for Horticulture Research and Development (SHRD) द्वारा स्वीकृत तथा कर्त हॉर्टिकल्चर रिसर्च जर्नल में प्रकाशित

विकसित भारत 2047 तथा वैश्विक Sustainable Development Goals (SDG-2047) के लक्ष्यों की प्राप्ति का यही है रोडमैप।

हमारी मान्यता एवं क्रेडेंशियल्स

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप इंडिया

ISO 9001:2015 प्रमाणित सेवा

फार्मर्स इन्वोक्शन काउंसिल (FIC) द्वारा मान्यता प्राप्त

कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त

स्वयं का रिसर्च एवं डेवलपमेंट लैब

READY TO START YOUR PLANTATION?

BOOK YOUR PLANTING MATERIAL

Australian Teak + Black Pepper MDP-16 (Registered Variety)

For Farmers, Industries, Agri Investors

0771-2263433, 9425265105

Our Expert Team

काली-मिर्च गिलोय सिंदूरी के पौधे मिले, सैकड़ों बच्चों व किसानों के चेहरे खिले

कोंडागांव। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मयूर डोंगर में विद्यार्थियों को खेती-किसानी और उद्यमिता से जोड़ने की दिशा में एक अभिनव पहल की गई। मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के सहयोग से विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को काली मिर्च एवं सिंदूरी तथा गिलोय आदि पौधों का निशुल्क वितरण किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण, व्यावसायिक कृषि तथा बस्तर की अनमोल व विलुप्त हो रही जड़ी बूटियों के संरक्षण संवर्धन के प्रति रुचि जागृत करना और भविष्य में कृषि तथा व्यावसायिक वृक्षारोपण से स्वरोजगार की संभावनाओं के प्रति जागरूकता पैदा करना था।

कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को मां दंतेश्वरी हर्बल समूह द्वारा तैयार किए गए काली मिर्च, गिलोय एवं सिंदूरी आदि के पौधे निशुल्क प्रदान किए गए। मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के निदेशक अनुराग कुमार के द्वारा विद्यार्थियों को इन पौधों को अपने घर अथवा उपयुक्त स्थान पर लगाने की व्यावहारिक तकनीक भी समझाया और इनकी नियमित देखभाल करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर लगभग 25 प्रगतिशील किसानों को भी यह पौधे निशुल्क प्रदान किए गए।

इस अवसर पर मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के संस्थापक डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को बस्तर की स्थानीय बोली हल्बी में संबोधित

मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के सहयोग से अभिनव पहल विद्यार्थियों को खेती से आत्मनिर्भर बनने का मिला मंत्र



करते हुए काली मिर्च और सिंदूरी की खेती के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इन पौधों को किस प्रकार लगाया जाता है, उनकी देखभाल कैसे की जाती है और उचित तरीके से खेती करने पर उनसे फसल प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को यह भी बताया कि काली मिर्च और सिंदूरी जैसे दीर्घजीवी पौधों से लंबे समय तक आय प्राप्त करने की संभावनाएं रहती हैं।

डॉ. त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को समझाया कि खेती को केवल पारंपरिक आजीविका के रूप में देखने के बजाय इसे व्यवस्थित व्यवसाय और उद्यमिता के रूप में भी अपनाया जा सकता है। उन्होंने पौधों की उपयोगिता, कृषि आधारित रोजगार और मूल्य संवर्धन की संभावनाओं के बारे में भी विद्यार्थियों को जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आज लगाया गया एक पौधा आने वाले वर्षों में परिवार की आय का अतिरिक्त स्रोत बन

सकता है। इस प्रकार पौधरोपण के साथ-साथ बच्चों में आर्थिक आत्मनिर्भरता की सोच भी विकसित की जा सकती है।

विद्यालय के प्राचार्य जमील खान ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को शिक्षा के उद्देश्य और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पढ़ाई-लिखाई का लक्ष्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होकर दूसरों को भी रोजगार देने में सक्षम बने। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि खेती-किसानी को छोटा या सामान्य काम समझने की जरूरत नहीं है। आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक सोच और बाजार की समझ के साथ कृषि को एक सफल व्यवसाय बनाया जा सकता है।

प्राचार्य जमील खान ने विद्यार्थियों के सामने डॉ. राजाराम त्रिपाठी के कार्यों का उदाहरण रखते हुए कहा कि उन्होंने बैंक मैनेजर, जैसे पद पर नौकरी करने के विकल्प के बजाय खेती-

किसानी और कृषि आधारित उद्यम का रास्ता चुना। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि यह उदाहरण बताता है कि यदि व्यक्ति के पास सही दृष्टिकोण, मेहनत, नवाचार और अपने काम के प्रति समर्पण हो तो खेती को भी बड़े व्यवसाय में बदला जा सकता है।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को यह संदेश दिया गया कि आने वाले समय में कृषि केवल खेत में फसल पैदा करने तक सीमित नहीं रहेगी। हर्बल खेती, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, विपणन और कृषि आधारित उद्योग युवाओं के लिए रोजगार एवं उद्यमिता के नए अवसर पैदा कर सकते हैं। विद्यालय प्रबंधन ने विद्यार्थियों से अपील की कि उन्हें दिए गए पौधों को केवल लेकर घर नहीं जाना है, बल्कि उनकी नियमित देखभाल भी करनी है। पौधे के विकास, उसकी देखभाल और उससे प्राप्त होने वाले परिणामों को विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाएं।

मयूर डोंगर विद्यालय में आयोजित यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को शिक्षा, प्रकृति, कृषि और स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आया। पौधे वितरण के माध्यम से विद्यार्थियों को यह संदेश दिया गया कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ आत्मनिर्भरता और समाज के विकास में योगदान देना भी है।

अरहर उत्पादन की धारवाड़ पद्धति का विद्यार्थियों को प्रशिक्षण



कटनी। शासकीय महाविद्यालय विजयराघवगढ़ में व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत स्नातक विद्यार्थियों को जैविक खेती और स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से अरहर उत्पादन की धारवाड़ पद्धति का प्रशिक्षण दिया गया। प्राचार्य डॉ. अरुण कुमार सिंह के मार्गदर्शन में जैविक कृषि विशेषज्ञ रामसुख दुबे ने विद्यार्थियों को कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीक समझाई।

प्रशिक्षण में धारवाड़ पद्धति से अरहर की उत्पादकता बढ़ाने, बीज दर कम करने, उन्नत किस्म के बीज के उपयोग, अंतरवर्तीय फसल, सिंचाई, खरपतवार, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा विभिन्न कृषि क्रियाओं की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को किस्म चयन, बीज उपचार, पॉलीथीन बैग में पौध तैयार करने, भूमि की तैयारी और

पौधरोपण की व्यावहारिक जानकारी भी दी गई। बताया गया कि प्रति हेक्टेयर करीब 2 किलो उन्नत बीज को मिट्टी और जैविक खाद से भरे पॉलीथीन बैग में बोया जाता है। 20 से 25 दिन बाद तैयार पौधों को खेत में कतार से कतार 5 फीट और पौधे से पौधे की दूरी 3 फीट रखते हुए लगाया जाता है। इस पद्धति में प्रति एकड़ लगभग 3 हजार पौधे लगाए जाते हैं। इसके बाद निंदाई-गुड़ाई, सिंचाई, कीट एवं रोग नियंत्रण, शीर्ष शाखाओं की कटाई, फसल कटाई, गहाई और भंडारण की तकनीक समझाई गई। प्रशिक्षण के दौरान आर्थिक विश्लेषण की जानकारी देते हुए बताया गया कि पारंपरिक कृषक पद्धति से करीब 47,350 रुपए तथा धारवाड़ पद्धति से लगभग 1,24,588 रुपए प्रति हेक्टेयर वार्षिक आय प्राप्त हो सकती है।

कृषि महाविद्यालय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का दीक्षारंभ

गंजबासौदा। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय गंजबासौदा में बीएससी एग्रीकल्चर (ऑनर्स) प्रथम वर्ष सत्र 2026-27 के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए दीक्षारंभ एवं स्वागत कार्यक्रम नवीन परीक्षा भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संविधान, नागरिक कर्तव्यों, पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ कृषि के महत्व की जानकारी दी गई।

अधिवक्ता एवं पूर्व शासकीय अभियोजक नरेंद्र व्यास तथा अधिवक्ता रुचि जैन ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, नीति निर्देशक तत्व, मौलिक कर्तव्यों, समानता एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सहित संवैधानिक प्रावधानों पर प्रकाश डाला। रुचि जैन ने विद्यार्थियों को



पर्यावरण संरक्षण और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अरविंद सक्सेना ने जलवायु परिवर्तन के दौर में पर्यावरण संरक्षण तथा टिकाऊ एवं समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि आधुनिक कृषि पद्धतियों के माध्यम से खेती को लाभकारी बनाया जा सकता है। डॉ. जी.आर. बंसल, योगेश पटेल एवं डॉ. पी.के. जगा ने विद्यार्थियों को

सामाजिक, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। डॉ. जगा ने मृदा विज्ञान की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को शत-प्रतिशत कक्षाओं में उपस्थित रहने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन मेजर (डॉ.) सतीश कुमार शर्मा एवं डॉ. अपर्णा जायसवाल ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय का शैक्षणिक एवं तकनीकी स्टाफ तथा विद्यार्थियों के पालक उपस्थित रहे।

स्वच्छ भारत दिवस पर सफाई कर्मियों का सम्मान

रीवा। कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत स्वच्छ भारत दिवस समारोह आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय रीवा के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने केंद्र परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया।

कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार ने बताया कि अभियान के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर की साफ-सफाई की गई। इसके बाद सफाई कर्मियों का माल्यार्पण कर केंद्र प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय ने सम्मान किया। इस अवसर पर स्वच्छता के महत्व और स्वच्छ परिसर बनाए रखने के लिए सभी की सहभागिता पर जोर दिया गया।



कार्यक्रम में डॉ. सी.जे. सिंह, डॉ. अखिलेश कुमार, शत्रुघ्न वर्मा सहित प्रगतिशील कृषक एवं केंद्र के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

ट्रॉपिकल एग्रो की प्रोडक्ट लॉन्चिंग और डीलर्स मीट आयोजित

इंदौर। ट्रॉपिकल एग्रो द्वारा इंदौर रीजन की डीलर्स मीटिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट (सेल्स) आर.एस. साई, नेशनल हेड फील्ड एंड मार्केटिंग मयंक गोयल, जोनल मैनेजर इंदौर रीजन संदीप जायसवाल, बी.के. तिवारी, जोनल मैनेजर भोपाल रीजन, उमेश चौधरी, जोनल मैनेजर छत्तीसगढ़ तथा इंदौर रीजन के सभी फील्ड स्टाफ मौजूद रहे। इस अवसर पर कंपनी के अध्यक्ष रहे स्वर्गीय वी.के. झावर को श्रद्धांजलि दी गई।

कार्यक्रम में कंपनी ने पांच नए उत्पाद लॉन्च किए, जिसमें मुख्य रूप से टेक डिवाइन, टेक्स सॉइल एक्स, टैग नाइट्रो शक्ति और टैग फोर्स शक्ति शामिल हैं।

कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट (सेल्स) आर.एस. साई ने कहा कि कंपनी के प्रेरणास्रोत रहे वी.के. झावर ने मजबूत नींव और उसूलों पर कंपनी को आगे बढ़ाया। उन्होंने हमेशा रिलेशनशिप को महत्व दिया, चाहे वह कंपनी के कर्मचारियों, डीलर्स या किसानों के साथ हो। उन्होंने किसानों, डीलर्स और कंपनी के कर्मचारियों की उन्नति का हमेशा ध्यान रखा। झावर सर ने भारत में सबसे पहले बायोलॉजिकल प्रोडक्ट पर रिसर्च शुरू की। इसका परिणाम है कि कंपनी आज भी बायोलॉजिकल प्रोडक्ट में नंबर वन है और ओवरऑल इंडियन मार्केट में इंडियन कंपनियों में दूसरे स्थान पर है।

उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि में डीलर्स का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कंपनी के पास 280 से ज्यादा प्रोडक्ट हैं और आने वाले समय में यह



ट्रॉपिकल के पांच नए प्रोडक्ट्स की लॉन्चिंग

रेंज 300 के पास पहुंच जाएगी। इनमें 9 से 10 पेटेंट प्रोडक्ट लॉन्च हो चुके हैं। उन्होंने डीलर्स से कंपनी के प्रति अपना सहयोग और विश्वास बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि केमिकल प्रोडक्ट की तुलना में पेटेंट और बायोलॉजिकल प्रोडक्ट को आगे बढ़ाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए, जिससे किसानों को भी फायदा पहुंचेगा। कंपनी में फॉरेन इन्वेस्टमेंट भी आया है, जिससे रिसर्च और बेहतर होगी। ट्रॉपिकल एकमात्र कंपनी है, जिसने पिछले 44 साल में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसका पूरा श्रेय कंपनी के चैनल पार्टनर्स को जाता है।

नेशनल हेड फील्ड एंड मार्केटिंग मयंक गोयल ने कहा कि उनका मध्य प्रदेश से पुराना नाता रहा है। उन्होंने अपने 27 साल के करियर में महत्वपूर्ण 7 साल मध्य प्रदेश में

बिताए हैं। उन्होंने बताया कि आज पूरे विश्व में क्रॉप प्रोटेक्शन का मार्केट लगभग 7.5 से 8 लाख करोड़ रुपये का है, जिसमें भारत का क्रॉप प्रोटेक्शन मार्केट 75 से 80 हजार करोड़ रुपये का है। इसमें डोमेस्टिक और इंटरनेशनल दोनों बाजार शामिल हैं। भारत के डोमेस्टिक मार्केट की बात करें तो यह लगभग 45 से 50 हजार करोड़ रुपये के आसपास है और निरंतर बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि भविष्य में नेक्स्ट जेनरेशन सॉल्यूशन पर काम हो रहा है और इस रिसर्च में जापान सबसे आगे है। आज नेक्स्ट जेनरेशन बायोलॉजिकल सॉल्यूशन पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। केमिकल प्रोडक्ट के लगातार इस्तेमाल से कीटों में उस केमिकल के प्रति प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जबकि

बायोलॉजिकल प्रोडक्ट में ऐसा नहीं होता। यही कारण है कि कंपनियां बायोलॉजिकल प्रोडक्ट पर ज्यादा रिसर्च कर रही हैं।

भारत में एग्रीकल्चर मार्केट लगभग 7 प्रतिशत की ग्रोथ से बढ़ रहा है, हालांकि पिछले वर्ष यह ग्रोथ 3 से 4 प्रतिशत रही। इसके बावजूद ट्रॉपिकल अपने उच्च गुणवत्ता वाले प्रोडक्ट तथा डीलर्स और किसानों के विश्वास के कारण पिछले वर्ष भी 6 प्रतिशत ग्रोथ पाने में सफल रही। उन्होंने विश्वास जताया कि कंपनी अपने नए पेटेंट और गुणवत्तापूर्ण प्रोडक्ट के माध्यम से आगे भी ग्रोथ बढ़ाने में सफल रहेगी।

मयंक गोयल ने लॉन्च किए गए उत्पादों की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि ये प्रोडक्ट किसानों के लिए काफी लाभकारी रहेंगे। कार्यक्रम में सिल्वर, गोल्ड और डायमंड कैटेगरी के डीलर्स को सम्मानित किया गया। वहीं, उपस्थित सभी डीलर्स के बीच लकी ड्रॉ के माध्यम से उपहार वितरित किए गए।

कंपनी के डीलर्स ने भी कंपनी के प्रति विश्वास जताया। उन्होंने कहा कि वे कई वर्षों से कंपनी से जुड़े हुए हैं, क्योंकि कंपनी के प्रोडक्ट और पॉलिसी बहुत अच्छी हैं। डीलर्स के अनुसार, कंपनी के प्रोडक्ट को लेकर किसानों से कोई शिकायत नहीं आती और पैदावार बढ़ने पर किसान भी खुश होते हैं।

संदीप जायसवाल ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में कंपनी अपनी सेवाओं के माध्यम से इस वर्ष भी अच्छी ग्रोथ प्राप्त करेगी।

ACE के आधुनिक ट्रैक्टर निर्माण से रूबरू हुए यूपी के 48 किसान

मेरठ, बागपत, अलीगढ़ और हाथरस के किसानों ने किया ACE संयंत्र का भ्रमण

मेरठ। उत्तर प्रदेश के 48 किसानों एवं ग्राहकों ने ACE के आधुनिक विनिर्माण संयंत्र का भ्रमण कर ट्रैक्टर निर्माण प्रक्रिया, तकनीकी विशेषताओं और गुणवत्ता मानकों की जानकारी ली। मेरठ, बागपत, खैर (अलीगढ़) तथा सिकंदराराऊ (हाथरस) से पहुंचे चार ग्राहक समूहों ने संयंत्र में निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को करीब से देखा। इस दौरान ग्राहकों की बढ़ती रुचि और भरोसे का परिणाम रहा कि चार ट्रैक्टरों की मौके पर ही बुकिंग की गई।

भ्रमण के दौरान किसानों को ट्रैक्टर निर्माण की आधुनिक तकनीक और गुणवत्ता जांच की प्रक्रिया समझाई गई। प्लांट प्रमुखों ने ग्राहकों से संवाद कर निर्माण के विभिन्न चरणों की जानकारी दी। किसानों ने हाइड्रोलिक एवं रोलर परीक्षण, सीएनसी मशीनों, इंजन निर्माण प्रक्रिया तथा अंतिम पूर्व-वितरण निरीक्षण को प्रत्यक्ष रूप से देखा। ACE टीम ने किसानों के सवालों के जवाब देते हुए ट्रैक्टर की तकनीक, निर्माण गुणवत्ता, सेवा और रखरखाव से संबंधित जानकारी साझा की। कार्यक्रम में ACE Champions सोनू कुमार पुनिया एवं अरविंद कुमार,



सेल्स ऑफिसर्स मोहम्मद शकील, जितेंद्र कुमार एवं अशोक सिंह, मनीष दीक्षित, सनित कुमार तथा कमर्शियल हेड सतपाल सिंह सहित कंपनी के अधिकारी मौजूद रहे। संयंत्र भ्रमण के बाद किसानों ने कहा कि खरीद से पहले ट्रैक्टर के निर्माण और गुणवत्ता जांच को प्रत्यक्ष देखना उनके

लिए उपयोगी अनुभव रहा। ACE का मानना है कि इस प्रकार के ग्राहक संयंत्र भ्रमण कार्यक्रम किसानों को ट्रैक्टर की वास्तविक निर्माण गुणवत्ता और तकनीकी क्षमता को समझने का अवसर प्रदान करते हैं तथा किसान और कंपनी के बीच विश्वास और मजबूत होता है।

शनमुखा एग्रीटेक ने किया किसान संगोष्ठी का आयोजन



राजगढ़। शनमुखा एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा ग्राम बिरल खेड़ी तहसील पंचोर जिला राजगढ़ में किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कंपनी के प्रतिनिधियों द्वारा किसानों को जैविक खेती की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया गया। कंपनी के असिस्टेंट जनरल मैनेजर सुरेन्द्र शर्मा ने खेती की मौसमी बीमारियों एवं उनके रोकथाम के बारे में विस्तार से समझाया और कंपनी के जैविक उत्पाद जैव उर्वरक वाम गोल्ड डी, धामन एवं जैव कीटनाशक जीत प्लस एकलव्य प्लस ट्राइकोडर्मा स्यूडोमोनास के उपयोग से खेती में होने वाले फायदों के बारे में बताया। खेती की नई नई तकनीकों के बारे में भी बताया। कंपनी के रीजनल मैनेजर अनूप त्रिपाठी ने कंपनी के विभिन्न अभिनव उत्पाद एवं उनके उपयोग के बारे में बताया और मिटटी की उर्वरक क्षमता को बनाये रखने के लिए रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर अग्रसर होने के लिए किसानों को प्रेरित किया। और अंत कंपनी के अधिकृत विक्रेता पाटीदार एग्रो के प्रोपराइटर रोहित पाटीदार के द्वारा किसान संगोष्ठी में पधारे किसान भाइयों का आभार व्यक्त किया गया।

- डॉ. सतेंद्र कुमार निरत ● डॉ. अनिल शिंदे
 - डॉ. भावना अहरवाल ● डॉ. बिश्वजीत रॉय
 - डॉ. पुनीत पटेल ● डॉ. अमिधा शुक्ला
- पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

रेबीज एक गंभीर और जानलेवा बीमारी है, जो मनुष्य और पशु दोनों को हो सकती है। हमारे गांवों में कुत्ते, गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और अन्य पशु किसानों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए पशुओं से जुड़ी इस बीमारी के बारे में सही जानकारी हर किसान और पशुपालक के लिए जरूरी है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां मनुष्य और पशु एक-दूसरे के करीब रहते हैं, वहां रेबीज से बचाव के लिए जागरूकता और सावधानी की विशेष आवश्यकता है।

इसी जागरूकता को बढ़ाने के उद्देश्य से हर वर्ष 28 सितम्बर को विश्व रेबीज दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 की थीम “Stronger Together” मिलकर मजबूत बने है। यह थीम बताती है कि रेबीज की रोकथाम किसी एक व्यक्ति या विभाग की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसके लिए किसान, पशुपालक, पशु चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, प्रशासन और पूरे समुदाय को मिलकर काम करना होगा।

इस सामूहिक प्रयास की जरूरत इसलिए है क्योंकि रेबीज के लक्षण दिखाई देने के बाद यह बीमारी लगभग हमेशा जानलेवा होती है, जबकि समय पर सही कदम उठाकर संक्रमण को रोका जा सकता है। इसलिए रेबीज में इलाज से अधिक महत्व बचाव, पशुओं के टीकाकरण और काटने के बाद तुरंत उचित चिकित्सा सहायता लेने का है। एक जागरूक किसान अपने पशु का समय पर टीकाकरण करवाकर, संदिग्ध पशु से सावधानी रखकर और काटने की स्थिति में तुरंत उपचार लेकर इस रोकथाम की महत्वपूर्ण कड़ी बन सकता है।

भारत ने भी 2030 तक कुत्तों से होने वाले मानव रेबीज को खत्म करनेका लक्ष्य रखा है। इसके लिए National Action Plan for Dog-Mediated Rabies Elimination (NAPRE) के तहत कुत्तों के व्यापक टीकाकरण और मानव एवं पशु स्वास्थ्य सेवाओं के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया गया है। इस लक्ष्य को हासिल करने में किसानों, पशुपालकों और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। यही सामूहिक भागीदारी “Stronger Together” के संदेश को वास्तविक रूप देती है।

रेबीज क्या है

रेबीज एक वायरस से होने वाली संक्रामक बीमारी है, जो मुख्य रूप से मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। इसका कारण Rabies virus आॅ Lyssavirus समूह से संबंधित है।

यह बीमारी मनुष्य सहित कई स्तनधारी पशुओं में हो सकती है। कुत्ता, बिल्ली और कुछ जंगली स्तनधारी इसके संक्रमण को फैलाने में भूमिका निभा सकते हैं। संक्रमित पशु कीलार में वायरस मौजूद होता है।

रेबीज कैसे फैलता है

- ▶ संक्रमित पशु का काटना
- ▶ संक्रमित लार लगी खरोंच
- ▶ संक्रमित लार का खुले घाव पर लगना
- ▶ संक्रमित लार का आंख, नाक या मुंह के संपर्क में आना।
- ▶ सिर्फ किसी पशु को छूने या उसके पास खड़े होने से सामान्यतः रेबीज नहीं फैलता।

कुत्ता इतना महत्वपूर्ण क्यों है

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में मनुष्यों में रेबीज के अधिकांश मामलों में कुत्तों से होने वाला संक्रमण प्रमुख भूमिका निभाता है। इसलिए मानव रेबीज को कम करने के लिए कुत्तों का टीकाकरण बहुत महत्वपूर्ण है।

पशुओं में रेबीज के लक्षण

किसान और पशुपालक अपने पशुओं को रोज देखते हैं



इसलिए पशु के व्यवहार में अचानक होने वाले बदलाव को पहचानने में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

- ▶ रेबीज से प्रभावित पशु में ये लक्षण दिखाई दे सकते हैं
- ▶ अचानक व्यवहार में बदलाव
- ▶ सामान्य से अधिक आक्रामक या डर जाना
- ▶ बिना कारण लोगों या दूसरे पशुओं को काटने की कोशिश
- ▶ इधर-उधर भटकना
- ▶ असामान्य आवाज निकालना
- ▶ अत्यधिक लार आना
- ▶ पानी या भोजन निगलने में परेशानी
- ▶ चलने में कठिनाई
- ▶ कमजोरी
- ▶ शरीर के कुछ हिस्सों में लकवा।

यह जरूरी नहीं कि हर रेबीज संक्रमित पशु आक्रामक हो। कुछ पशुओं में कमजोरी और लकवे के लक्षण अधिक दिखाई दे सकते हैं। यदि किसी पशु में अचानक असामान्य व्यवहार या ऐसे तंत्रिका संबंधी लक्षण दिखाई दे, तो उसे स्वयं पकड़ने की कोशिश न करें। पशु चिकित्सक या संबंधित पशु स्वास्थ्य कर्मचारी को तुरंत सूचना दें।

मनुष्यों में रेबीज के लक्षण

बुखार, सिरदर्द, कमजोरी, बेचैनी, घबराहट, काटे गए स्थान पर दर्द या जलन, झुनझुनी या असामान्य संवेदना बाद में बीमारी मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने लगती है। व्यक्ति में अत्यधिक बेचैनी, व्यवहार में बदलाव, निगलने में परेशानी, पानी पीने पर ऐंठन, मांसपेशियों की कमजोरी और लकवा जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। लक्षण आने का इंतजार न करें।

किसी संदिग्ध पशु के काटने या जोखिम वाले संपर्क के बाद तुरंत चिकित्सा सलाह लेना जरूरी है, क्योंकि लक्षण शुरू होने के बाद बीमारी लगभग हमेशा जानलेवा होती है।

कुत्ते या किसी संदिग्ध पशु के काटने पर क्या करें

- ▶ घाव को तुरंत धोएं
- ▶ काटने के बाद घाव को साबुन और बहते पानी से कम से कम 15 मिनट तक अच्छी तरह धोएं।
- ▶ तुरंत स्वास्थ्य केन्द्र जाएं
- ▶ घाव छोटा होए खून कम निकला हो या काटने वाला पशु सामान्य दिखाई दे रहा हो, फिर भी डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है।
- ▶ डॉक्टर की सलाह के अनुसार रेबीज का टीका लगवाएं
- ▶ डॉक्टर काटने की स्थिति और जोखिम के अनुसार रेबीज वैक्सीन की सलाह देंगे। डॉक्टर द्वारा बताए गए टीकाकरण कार्यक्रम को पूरा करना जरूरी है।

गंभीर मामलों में विशेष उपचार

- ▶ कुछ गंभीर प्रकार के संपर्क में रेबीज इम्युनोग्लोबुलिन की आवश्यकता हो सकती है। इसकी जरूरत है या नहीं, इसका निर्णय चिकित्सक करते हैं।

टीकाकरण: रेबीज से बचाव की पहली ढाल

रेबीज से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है कि संभावित स्रोत पशुओं, विशेषकर कुत्तों, का समय पर टीकाकरण किया जाए। कुत्तों में संक्रमण को रोकने से मनुष्यों में रेबीज का खतरा भी कम होता है। इसलिए पालतू कुत्ते का टीकाकरण केवल उसे बीमारी से बचाने के लिए नहीं, बल्कि उसके संपर्क में रहने वाले परिवार और समुदाय की सुरक्षा के लिए भी

रेबीज खतरा गंभीर बचाव आसान

महत्वपूर्ण है। गांवों और शहरों में बड़ी संख्या में कुत्तों का नियमित टीकाकरण रेबीज के फैलाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

किसान और पशुपालक अपने कुत्ते का टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह और स्थानीय टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार करवाएं तथा टीकाकरण का रिकॉर्ड सुरक्षित रखें। पिल्लों में पहला टीकाकरण और उसके बाद के बूस्टर टीकों की समय-सारणी संबंधित वैक्सीन और पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तय की जाती है। रेबीज नियंत्रण के लिए केवल पालतू कुत्तों का ही नहीं, बल्कि समुदाय में पाए जाने वाले कुत्तों का भी बड़े स्तर पर टीकाकरण जरूरी है।

यदि टीका लगा हुआ कुत्ता भी किसी व्यक्ति को काट ले तो केवल यह सोचकर कि ‘कुत्ते को टीका लगा है’ चिकित्सा सलाह को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। घाव को तुरंत साबुन और बहते पानी से अच्छी तरह धोकर बिना देरी किए स्वास्थ्य केन्द्र जाएं और डॉक्टर की सलाह के अनुसार आगे का उपचार लें।

कुछ सरल सावधानियां अपनाकर किसान अपने परिवार और पशुओं को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

- ▶ अपने पालतू कुत्तों का नियमित टीकाकरण करवाएं।
- ▶ कुत्तों को अनियंत्रित रूप से घूमने से रोकें।
- ▶ अनजान या संदिग्ध पशु से दूरी रखें।
- ▶ असामान्य व्यवहार करने वाले पशु को खुद पकड़ने की कोशिश न करें।
- ▶ संदिग्ध पशु की सूचना पशु चिकित्सक को दें।
- ▶ बच्चों को आवारा या अनजान कुत्तों के पास जाने से रोकें।
- ▶ पशु के काटने या खरोंचने की घटना को छिपाएं नहीं।
- ▶ काटने के बाद तुरंत स्वास्थ्य केन्द्र जाएं।

मिलकर मजबूत बनें

- ▶ विश्व रेबीज दिवस 2026 की थी मिलकर मजबूत बनें हमें बताती है कि रेबीज को कोई एक व्यक्ति या विभाग अकेले खत्म नहीं कर सकता।
- ▶ किसान- अपने कुत्ते का टीकाकरण कर सकता है।
- ▶ पशु चिकित्सक- पशुओं का टीकाकरण और संदिग्ध मामलों की पहचान कर सकता है।
- ▶ डॉक्टर- काटे गए व्यक्ति को समय पर उचित उपचार दे सकता है।
- ▶ स्वास्थ्यकर्मी- लोगों को सही जानकारी दे सकते हैं।
- ▶ स्थानीय प्रशासन- टीकाकरण, निगरानी और जागरूकता कार्यक्रमों में सहयोग कर सकता है।
- ▶ समुदाय- सही जानकारी को हर परिवार तक पहुंचा सकता है।
- ▶ जब ये सभी प्रयास एक साथ आते हैं, तो रेबीज के खिलाफ हमारी सुरक्षा मजबूत होती है।

हर किसान को याद रखनी चाहिए ये 5 बातें

- ▶ अपने कुत्ते का समय पर रेबीज टीकाकरण करवाएं।
- ▶ संदिग्ध या असामान्य व्यवहार करने वाले पशु से दूरी रखें।
- ▶ काटने पर घाव को तुरंत साबुन और पानी से 15 मिनट तक धोएं।
- ▶ बिना देरी किए स्वास्थ्य केन्द्र जाएं।
- ▶ घरेलू नुस्खों पर भरोसा न करें और डॉक्टर की सलाह के अनुसार पूरा उपचार लें।

- डॉ.किंजल्क सी.सिंह
- डॉ.चंद्रजीत सिंह
- डॉ.अजय कुमार पांडेय

कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा (म.प्र.)

वर्ष ऋतु के पश्चात शरद ऋतु आती है जिसमें दो मास, अश्विन (क्रौंर) तथा और कार्तिक आते हैं। शरद ऋतु में आकाश से बादल हटा जाने से होने वाली प्रखर धूप के कारण मौसम गर्म और नमी युक्त हो जाता है जिससे वातावरण में सूक्ष्म तत्व अधिक सक्रिय हो जाते हैं तथा स्वास्थ्य का तथा आहार-विहार का ध्यान रखना बहुत आवश्यक हो जाता है।

शरद ऋतु एवं स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ एवं स्वास्थ्य रक्षा

आयुर्वेद के अनुसार इस ऋतु में प्रकृति में पित्त दोष प्रकुपित होता है तथा वात दोष का शमन होता है तथा जठरागनी मन्द रहती है। पित्त, अग्नि तथा जल महाभूत से निर्मित होता है। पित्त के कारण रक्त धातु दूषित होता है। इस ऋतु में हाथ पाँव में जलन, मुँह में छाले होना, दुर्गन्धयुक्त पसीना आना, चक्कर आना, आँखें लाल होना, आँखे जलना, त्वचा संबंधी समस्याएँ होना, बालों का झड़ना, बालों का सफेद होना, मासिक धर्म का स्त्राव अधिक होना, एसिडिटी, सीने में जलन होना, खट्टी डकारें, पीलिया होना, पीली पेशाब होना, त्वचा में पीलापन होना तथा सर दर्द, हो सकता है। यदि पित्त दोष को संतुलित रखा जा सके तो स्वास्थ्य की रक्षा सरलता से की जा सकती है।

शरद ऋतु एवं अनुशसित एवं निषिद्ध रस (स्वाद)

- शरद ऋतु में मीठे, कड़वे (करेला और नीम आदि) और कसैले (आँवला, कच्चा अमरूद, पालक, मसूर आदि) रस (स्वाद) की खाद्य सामग्री के सेवन करने की अनुशंसा है। यह रस पित्त को नियंत्रित करते हैं।
- साथ ही खट्टे, नमकीन तथा तिक्त (तीखे) रस (स्वाद) वाली खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करने की अनुशंसा है क्योंकि यह रस, पित्त की वृद्धि करते हैं।

शरद ऋतु एवं पारम्परिक आहारिय अनुशंसा

अश्विन (क्रौंर) माह में गुड़ का सेवन तथा कार्तिक माह में करेले का सेवन अवश्य करना चाहिये किन्तु अश्विन (क्रौंर) माह में करेला तथा कार्तिक माह में मही का सेवन नहीं करना चाहिये।

शरद ऋतु में पित्त दोष को संतुलित करने के लिये

महत्वपूर्ण आहार-विहार सम्बंधी अनुशंसाएँ

- चूँकि मौसम में गर्मी बढ़ी है अतः इस ऋतु में शीत और लघु आहार का सेवन करना चाहिये अर्थात् पचने में हल्के आहार का सेवन करें गरिष्ठ आहार जैसे मिठाईयाँ, तली हुई मसालेदार

स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

मुरैना। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना द्वारा 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2026 तक विभिन्न स्वच्छता एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'स्वच्छता में सहभागिता, स्वच्छ भारत, विकसित भारत' की थीम पर आयोजित इन कार्यक्रमों में केन्द्र के साथ स्कूल, गांव एवं चिन्हित स्थलों पर स्वच्छता गतिविधियाँ संचालित की गईं। अभियान में 270 से अधिक किसानों, विद्यार्थियों, प्रसार कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों ने सहभागिता की। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. जे.सी. गुप्ता के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में सफाईकर्मी अर्जुन को शॉल, श्रीफल एवं पुष्पमाला भेंटकर सम्मानित किया गया। डॉ. गुप्ता ने स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आसपास के सार्वजनिक स्थलों एवं कार्यालय में साफ-सफाई बनाए रखने की अपील की। कार्यक्रम प्रभारी अर्चना खरे ने कहा कि भोजन एवं खान-पान में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने से अनेक बीमारियों से बचाव किया जा सकता है। कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. ए.एस. यादव, डॉ. पी.पी. सिंह, रीना शर्मा सहित अधिकारी एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की।

शरद ऋतु में आहार-विहार

व्यंजन का सेवन नहीं करें और गर्म मसालों (जैसे लौंग, काली मिर्च, दालचीनी, मेथी दाना, जायफल, पीपली, जावित्री, तेज पत्ता) का उपयोग नहीं करें बल्कि ठंडे मसालों (धनिया, सौंफ, जीरा एवं मिश्री आदि) का उपयोग करें।

- आवश्यक मात्रा में ही भोजन करें तथा भूख अच्छी प्रकार से लगने पर ही भोजन करें। साथ ही ध्यान रखें कि लंबे समय तक भूखे नहीं रहें।
- पित्त को नियंत्रित करने के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण आहार है देसी गाय के दूध से निर्मित घी। नारियल का तेल भी प्रकृति में ठंडा होता है। अतः आहार में देसी गाय के दूध से बने घी का और नारियल के तेल का ही उपयोग करें।
- गर्म तासीर के तेल, जैसे सरसों और तिल का उपयोग अभी आहार में नहीं करें।
- हल्की दालें जैसे मूँग और अरहर का उपयोग करें, मसूर की दाल का भी सेवन किया जा सकता है किन्तु अन्य गरिष्ठ दालों का उपयोग नहीं करें।
- पुराना चावल, गेहूँ, जौ और ज्वार जैसे अनाजों का सेवन करना चाहिये। चावल को प्रेशर कुकर में नहीं पकायें बल्कि इसे बर्तन में पकायें।
- लौकी, गिल्ली, कच्चा केला, कद्दू, परवल, पेठा (भूरा कद्दू अथवा बरिहा) की सब्जी का सेवन करें। सुबह बरिहा के रस का सेवन करना पित्त को नियंत्रित करने के लिये लाभदायक होता है। करेले जैसी कड़वी सब्जी का सेवन अश्विन (क्रौंर) माह में नहीं करें किन्तु कार्तिक माह में अवश्य करें। अदरक, मिर्च और काली मिर्च जैसे तिक्त मसालों का सेवन नहीं करें।

सब्जी बनाते समय घी अथवा नारियल के तेल का छौंका लगायें ताकि पित्त को नियंत्रित रखा जा सके।

- शरद ऋतु में दूध, दही, और मक्खन के सेवन की भी अनुशंसा है किन्तु दही और छाछ का सेवन नहीं करें। साथ ही, समय खमीर युक्त अथवा फर्मेंटेड भोजन जैसे ब्रैड, ढोकला, इडली, डोसा इत्यादि से भी दूर रहें।
- आँवले का अचार (ऐसा अचार जो बहुत मसालेदार नहीं हो) के अतिरिक्त किसी भी अन्य अचार का सेवन नहीं करें। आँवले का मुरब्बा, कैन्डी और सुपारी, रस और शर्बत तथा कोकम का शर्बत तथा शहद के पानी के सेवन की भी अनुशंसा है।
- अंजीर, मुनक्का (काला), केला, सीताफल, मीठे अंगूर, पिंड खजूर, हरड़, आँवला और नारियल के पानी इत्यादि का सेवन कर सकते हैं किन्तु खट्टे फलों का सेवन नहीं करें।
- पानी का सेवन करें जिसमें दिन में सूर्य की किरणें तथा रात को चन्द्र की किरणें पड़ी हों (हंसोदक), का सेवन लाभकारी होता है किन्तु आज के समय में इस प्रकार का पानी उपलब्ध होना व्यवहारिक तौर पर कठिन है। अतः पीने के लिये पानी को तैयार करने की सरल विधि अपनायें जो इस तरह है:-

पानी में थोड़ा सा आँवले का चूर्ण डाल कर उबालें फिर छान कर ठंडा कर सेवन करें।

एक चम्मच साबुत धनिया अथवा एक चम्मच साबुत सौंफ को दो कप पानी में डाल कर उबालें, जब आधा कप पानी बचे तो इसमें थोड़ी मिश्री डाल कर घोलें। इस प्रकार से तैयार किये गये पानी को दिन में दो बार सेवन किया जा सकता है जिससे पित्त दोष नियंत्रित होता है। पानी को छान कर ठंडा कर के सेवन में लें। रात को काले मुनक्के को पानी में रख दें सुबह इस पानी को पी सकते हैं तथा मुनक्के का सेवन भी कर सकते हैं।

- दिन में बाहर कम निकलें। यदि निकलना आवश्यक हो तो टोपी अथवा छाता लगा कर ही बाहर निकलें। दिन में सोयें नहीं। रात्रि शीतल होती है अतः रात्रि में चंद्र की शीतलता में बाहर घूम सकते हैं अथवा बैठ सकते हैं।

विरेचन तथा रक्त शोधन

मल, मूत्र और स्वेद (पसीने) का विसर्जन भलीभाँति कर शरीर को शुद्ध करें तथा रक्त शोधन कर रक्त शुद्ध करें जिससे पित्त द्वारा दूषित रक्त का त्याग होता है अतः इस ऋतु में लीच थैरैपी तथा रक्तदान करना लाभकारी होता है। त्वचा पर चन्दन का लेप लगाना लाभकारी होता है।

नोट: यह अनुशंसा मात्र स्वस्थ व्यक्तियों के लिये है एवं यह अनुशंसा किसी भी प्रकार का उपचार नहीं है। कृपया किसी भी प्रकार के उपचार हेतु प्रमाणित चिकित्सक से राय लें।

अन्नदाता का साथ किसान का विकास

अन्नदाता
जिकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)
सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत

अन्नदाता जिबो

अन्नदाता जिबो का वादा
मिटी जानवार और उपज भी ज्यादा

अन्नदाता
जिबो

अन्नदाता
जिबो

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा - सागर)

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

छतगांव में तिलहन फसलों को बढ़ावा देने कृषक प्रशिक्षण

फसल विविधीकरण और उन्नत तकनीकों की दी गई जानकारी

शाजापुर। राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन-तिलहन के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, शाजापुर द्वारा कृषि विभाग के सहयोग से ग्राम छतगांव में कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 50 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. धाकड़, डॉ. गायत्री वर्मा रावल, डॉ. मुकेश सिंह, डॉ. डी.के. तिवारी, नीतू चौहान एवं अरविंद पाटीदार सहित प्रगतिशील किसान मौजूद रहे। डॉ. गायत्री वर्मा रावल ने किसानों को तिलहन फसलों का रकबा बढ़ाने के लिए फसल विविधीकरण अपनाने की सलाह दी। उन्होंने सोयाबीन, तिल, मूंगफली, कुसुम, सूरजमुखी और सरसों की उन्नत खेती के साथ इनके प्रसंस्करण एवं स्वरोजगार



की संभावनाओं की जानकारी दी। डॉ. एस.एस. धाकड़ ने तिलहन फसलों के लिए उन्नत किस्मों के चयन, समन्वित पोषण प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य, भूमि एवं जल संरक्षण तथा पौध संरक्षण उपायों पर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने उन्नत कृषि यंत्रों, फसल अवशेष प्रबंधन तथा कटाई-गहाई तकनीकों की उपयोगिता भी बताई। डॉ. मुकेश सिंह ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग तथा समन्वित कीट प्रबंधन की जानकारी दी। किसानों को तिलहन उत्पादन बढ़ाने के साथ मधुमक्खी पालन

के लिए भी प्रेरित किया गया। डॉ. डी.के. तिवारी ने प्राकृतिक एवं जैविक खेती तथा उन्नत किस्मों के संबंध में जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान किसानों की समसामयिक कृषि समस्याओं का समाधान किया गया। नीतू चौहान ने पुनर्योजी खेती को अपनाने और कम से कम एक बीघा भूमि में जैविक एवं प्राकृतिक खेती शुरू करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में तहत किसानों एवं ग्रामीणों को स्वच्छता की शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम का आधार अरविंद पाटीदार ने व्यक्त किया।

निकरा परियोजना के तहत कृषक प्रशिक्षण आयोजित

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र जावरा, रतलाम द्वारा संचालित निकरा परियोजना के एससी-एसपी घटक के अंतर्गत ग्राम नवाबगंज में एक दिवसीय असंस्थागत कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सर्वेश त्रिपाठी के मार्गदर्शन में हुआ, जिसमें 24 किसानों ने सहभागिता की।

निकरा परियोजना के को-पीआई डॉ. रामधन घसवा ने किसानों को खरीफ 2026 के एफएलडी प्रदर्शन प्लॉट से प्राप्त उत्पादन को आगामी वर्ष बीज के रूप में उपयोग करने के लिए उचित तरीके से भंडारित करने की सलाह दी। उन्होंने एकीकृत खेती प्रणाली, बकरी पालन, मुर्गीपालन एवं प्राकृतिक खेती से जुड़े विभिन्न उत्पादों और तकनीकों की जानकारी दी।

कचरे से बने उपयोगी संसाधन, विद्यार्थियों ने दिखाए नवाचार



रायपुर। स्वच्छता में सहभाग-स्वच्छ भारत-विकसित भारत अभियान के तहत भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान (एनआईबीएसएम), रायपुर में बीएससी कृषि विद्यार्थियों ने 'वेस्ट टू वेल्थ' विषय पर विभिन्न मॉडल और नवाचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने घरेलू कचरे, कृषि अवशेष और जैव-अवक्रमणीय अपशिष्ट के पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण, कचरा पृथक्करण तथा मूल्य संवर्धन से संबंधित मॉडल प्रदर्शित किए। इन मॉडलों के माध्यम से कचरे को उपयोगी संसाधन में बदलने के व्यावहारिक और पर्यावरण-अनुकूल उपाय बताए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने विद्यार्थियों की

रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि अपशिष्ट प्रबंधन का उद्देश्य केवल स्वच्छता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि संसाधनों की पुनर्प्राप्ति और सतत उपयोग पर भी जोर दिया जाना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को स्थानीय जरूरतों के अनुरूप अपने नवाचारों को व्यावहारिक और व्यापक स्तर पर उपयोगी बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. के.के. मंडल, डॉ. डेजी पृथक्करण तथा मूल्य संवर्धन से संबंधित मॉडल प्रदर्शित किए। इन मॉडलों के माध्यम से कचरे को उपयोगी संसाधन में बदलने के व्यावहारिक और पर्यावरण-अनुकूल उपाय बताए गए। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. श्रावणी सन्याल ने किया।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 30 सितंबर 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	974.8	899.3	8
अलीराजपुर	475.9	871.8	-45
अशोकनगर	779.5	856.2	-9
बड़वानी	598.2	669.4	-11
बैतुल	718.3	1038.1	-31
भिंड	834.6	612.5	36
भोपाल	1046.5	956.2	9
बुरहानपुर	776.7	737.3	5
दतिया	807.3	745.4	8
देवास	787	904.7	-13
धार	492.9	818.8	-40
गुना	1052.1	940.9	12
ग्वालियर	758.7	721.5	5
हरदा	706.9	1078.8	-34
इंदौर	633.1	868.1	-27
झाबुआ	576.4	884.2	-35
खंडवा	708.2	789.1	-10
खरगोन	756.1	719.3	5
मन्दसौर	750.9	825.3	-9
मुरैना	586.4	644.3	-9
नर्मदापुरम	831.9	1259.1	-34
नीमच	686.4	776.9	-12
रायसेन	888	1084.6	-18
राजगढ़	1052.8	893	18
रतलाम	598.3	914.5	-35
सीहोर	883.6	1070.3	-17
शाजापुर	712.4	905.9	-21
श्यामपुर	780.4	666.4	17
शिवपुरी	976	787.3	24

उज्जैन	644.6	884.4	-27
विदिशा	836.6	1023.3	-18
पश्चिमी म.प्र.	774	877.3	-12
अनूपपुर	1168.8	997.5	17
बालाघाट	1162.7	1239.4	-6
छतरपुर	1099.1	941.4	17
छिंदवाड़ा	815.4	1032.9	-21
दमोह	1051.7	1088.9	-3
डिंडोरी	1186.9	1183.2	0
जबलपुर	997.6	1130.1	-12
कटनी	957.8	941.5	2
मंडला	1215.5	1197.1	2
नरसिंहपुर	1022.8	1051.8	-3
निवाड़ी	1230.3	775.6	59
पन्ना	1264.4	1086.9	16
रीवा	866.4	990.6	-13
सागर	930.1	1068.5	-13
सतना	1426	941	52
सिवनी	857.4	1018.1	-16
शहडोल	1213.4	992.8	22
सीधी	1203.8	1047.8	15
सिंगरौली	1149.2	1032.9	11
टीकमगढ़	970	911.8	6
उमरिया	1302.6	1075.6	21
मैहर	1172.6	975.6	20
मऊगंज	1502.3	979.3	53
पांडुरंगा	623.5	807.5	-23
पूर्वी म.प्र.	1080.7	1043.4	4
म.प्र. योग	907.2	949.5	-4

(स्रोत : मौसम विभाग)

Organizer

Radeecal Colossal

India Farm-Tech

AN EXHIBITION ON FARMING TECHNOLOGY

14 - 15 - 16 FEBRUARY 2027

ICAR(CIAE) GROUND NABI BAGH, BERASIA ROAD BHOPAL MADHYA PRADESH

Empowering the Future of Agriculture

International Exhibition On Agriculture, Dairy & Horticulture Technology

BOOK YOUR STALL NOW!

STALL BOOKING CONTACT DETAILS

M: +91 99740 29797, +91 75677 02025

agri@farmtechindia.in | www.farmtechindia.in

इफको द्वारा विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन

भोपाल। इफको राज्य कार्यालय, भोपाल द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत 17 सितंबर 2026 से 02 अक्टूबर 2026 तक मध्यप्रदेश में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। अभियान का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना, स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण के निर्माण में सहभागिता सुनिश्चित करना तथा स्वच्छता को दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का संदेश देना रहा।

इस विशेष अभियान के दौरान इफको, राज्य कार्यालय भोपाल द्वारा विभिन्न स्वच्छता एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। अभियान में इफको मध्यप्रदेश के राज्य विपणन प्रबंधक आदरणीय डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी, मुख्य प्रक्षेत्र प्रबंधक आदरणीय डॉ.



ओम शरण तिवारी, उप प्रचार प्रबंधक श्री विकास चौरसिया सहित राज्य कार्यालय, भोपाल के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की।

अभियान के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वच्छता गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कार्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने, साफ-सफाई के प्रति जागरूकता फैलाने तथा स्वच्छ वातावरण के महत्व का संदेश दिया गया। सभी ने सामूहिक रूप से स्वच्छता को केवल एक

अभियान तक सीमित न रखते हुए इसे नियमित व्यवहार एवं सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी ने कहा कि स्वच्छता केवल हमारे आसपास के वातावरण को साफ रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्वस्थ जीवन, सकारात्मक सोच और जिम्मेदार नागरिकता का महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से स्वच्छता के प्रति निरंतर सजग रहने तथा समाज में स्वच्छता का संदेश पहुंचाने का आह्वान किया।

का आह्वान किया।

इफको राज्य कार्यालय भोपाल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने स्वच्छता ही सेवा अभियान को सफल बनाने में उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाते हुए स्वच्छता, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत किया। अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि स्वच्छ कार्यालय, स्वच्छ परिसर और स्वच्छ समाज के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता महत्वपूर्ण है। इफको राज्य कार्यालय भोपाल द्वारा अभियान में सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा स्वच्छता के इस संकल्प को निरंतर जारी रखने का संदेश दिया गया।

जबलपुर। कुंडम विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में सब्जी उत्पादन किसानों, खासकर आदिवासी महिला किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी का मजबूत जरिया बन रहा है। एसबीआई फाउंडेशन के सहयोग से लोक कल्याण भूमिका समिति द्वारा संचालित ग्राम सक्षम परियोजना के तहत 10 गांवों में किसानों को उन्नत सब्जी बीज, आधुनिक कृषि तकनीक और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है।



इसका असर अब खेतों में बेहतर उत्पादन और किसानों की बढ़ती आय के रूप में दिखाई देने लगा है।

परियोजना के तहत सलैया स्थित किसान भवन में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों को बीज चयन, फसल प्रबंधन, सब्जी उत्पादन की आधुनिक तकनीक और बेहतर पैदावार के संबंध में प्रशिक्षण दिया। इसके बाद संस्था ने किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले सब्जी बीज उपलब्ध कराए। बड़ी संख्या में महिला किसानों ने इन बीजों को खेतों में लगाया, जिससे इस सीजन में उन्हें अच्छी पैदावार मिली।

सब्जी उत्पादन से बदली महिलाओं की तस्वीर हर सप्ताह 2 से ढाई हजार रुपये की आमदनी



उत्पादन बढ़ने के साथ किसानों को स्थानीय बाजार के अलावा जबलपुर के जैविक हाट बाजार में भी उपज बेचने का अवसर मिल रहा है। कई किसान हर सप्ताह 2 से ढाई हजार रुपये तक की सब्जियां बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे हैं। इससे ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ने के साथ महिलाओं की आर्थिक भागीदारी भी मजबूत हो रही है।

किसानों के अनुसार पहले उन्हें सीजन में मजदूरी के लिए दूसरे स्थानों पर जाना पड़ता था, लेकिन अब खेत में ही रोजगार और आय का अवसर मिल रहा है। बेहतर उत्पादन के चलते किसान बाजार में सब्जियां बेचने के साथ अगली फसल के लिए बीज भी सुरक्षित रख रहे हैं। महिला किसानों का कहना है कि सब्जी उत्पादन

अध्यक्ष रेखा कुशवाहा ने बताया कि वर्षा ऋतु में 90 किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले सब्जी बीज उपलब्ध कराए गए थे। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के माध्यम से किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया गया। आगामी शरद ऋतु में 100 नए किसानों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षण और उन्नत सब्जी बीज उपलब्ध कराए जाएंगे। उन्होंने बताया कि खेत तालाबों के माध्यम से सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता बढ़ने की उम्मीद है। इससे किसान सब्जी उत्पादन को आगे भी जारी रख सकेंगे। परियोजना के तहत कृषि, जल संरक्षण और आजीविका गतिविधियों को जोड़कर ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है।

से उन्हें घरेलू जरूरतों के लिए उपज के साथ अतिरिक्त आय का साधन मिला है।

लोक कल्याण भूमिका समिति की

(पृष्ठ 5 का शेष)

धान में रोग प्रबंध..

- ▶ **लक्षण :** यह रोग कुल दो अवस्थाओं में होता है, पर्ण झुलसा अवस्था एवं क्रेसेक अवस्था जिसमें पर्ण झुलसा अधिक व्यापक है।
- ▶ **झुलसा अवस्था:** पत्ती की सतह पर जलसिक्त क्षत बन जाते हैं और इनकी शुरुआत पत्तियों के ऊपरी सिरों से होती है। बाद में ये क्षत हल्के पीले या पुआल के रंग के हो जाते हैं। ये क्षत उत्तिकक्षयी होकर बाद में तेजी से सूख जाती है।
- ▶ **ग्लानी या क्रेसेक अवस्था:** रोग की यह अवस्था नर्सरी में दिखाई देती है। इसमें अचानक ग्लानी एवं पीतिमा इसके सामान्य लक्षण है। ग्लानि लक्षण की दूसरी अवस्था है। ये लक्षण रोपाई के 2-4 सप्ताह के अंदर प्रकट होने लगते हैं। ग्रसित पौधों की पत्तियां लंबाई में अन्दर की ओर सिकुड़कर मुड़ जाती है।
- ▶ आक्रांत भाग से जीवाणु का रिसाव होता है। धान की फसल में से दूर से ही बदबू आने लगती है। पर्णच्छद भी संक्रमित होता है। रोग के उग्र अवस्था में ग्रस्त पौधे पूर्ण रूप से मर जाते हैं।

प्रबंधन

- ▶ रोग रोधी किस्मों जैसे- आई.आर. 20, मंसूरी, प्रसाद, रामकृष्णा, रत्ना, साकेत-4, राजश्री और सत्यम आदि का चुनाव करें।
- ▶ एक ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन या 5 ग्राम एग्रीमाइसीन 100 को 45 लीटर पानी घोलकर बीज को बोने से पहले 12 घंटे तक डुबों ले।
- ▶ बीजों को स्यूडीमीनास फ्लोरेसेन्स 10 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित कर लगावें।
- ▶ खड़ी फसल में रोग दिखने पर ब्लाइटाक्स-50 की 2.5 किलोग्राम एवं एग्रीमाइसीन 100 का 75 ग्राम और कॉपर आक्सीक्लोराइड का 500 ग्राम 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

दीवटिया में



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री मुकेश नागर

नागर कृषि सेवा केन्द्र
दीवटिया, जिला-रायसेन
(म.प्र.) मो. 9589277415



मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

● औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पाटर्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सर्टिड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

कोड़िया जरगर में पीएम किसान संगोष्ठी 150 किसानों ने लिया कृषि उन्नति का संकल्प

कोड़िया जरगर। ग्राम कोड़िया जरगर में इंडियन पोटाश लिमिटेड (आईपीएल), भोपाल के तत्वावधान में पीएम किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ग्राम कोड़िया जरगर सहित आसपास के क्षेत्र से लगभग 150 किसान भाइयों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और आगामी रबी सीजन सहित आधुनिक एवं उन्नत कृषि तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सुरजीत सिंह सोलंकी, डिप्टी मार्केटिंग मैनेजर, इंडियन पोटाश लिमिटेड, भोपाल रहे। वहीं विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री वीरेंद्र यादव, एग्रीकल्चर एक्सपर्ट ऑफिसर, राजगढ़; श्री कवरलाल यादव, पूर्व प्राचार्य, संस्कृत विद्यालय खुजनेर; श्री कुलदीप नागर, रूरल एग्रीकल्चर एक्सपर्ट ऑफिसर, खुजनेर तथा ग्राम



के वरिष्ठजन श्री शंकरलाल पाटीदार उपस्थित रहे। सुरजीत सिंह सोलंकी ने किसानों को जैविक कृषि एवं संतुलित कृषि पद्धतियों के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आधुनिक तकनीक, उचित कृषि प्रबंधन एवं प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग के माध्यम से खेती को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। श्री वीरेंद्र यादव ने कृषि विभाग द्वारा किसानों के हित में संचालित विभिन्न योजनाओं, कृषि संबंधी सुविधाओं एवं उपयोगी जानकारी से किसानों को अवगत कराया। वहीं श्री कवरलाल यादव ने

किसानों को बेहतर जीवन जीने तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें साझा कीं। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री महेंद्र यादव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री अनिरुद्ध नामदेव, सेल्स ऑफिसर, इंडियन पोटाश लिमिटेड, राजगढ़ ने सभी अतिथियों, किसान भाइयों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री श्रीचंद पटेल, एग्रीकल्चरिस्ट, इंडियन पोटाश लिमिटेड, राजगढ़ का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

धान, ज्वार-बाजरा बेचने 3 लाख किसानों ने कराया पंजीयन

भोपाल। खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार एवं बाजरा उपार्जन के लिए प्रदेश में पंजीयन प्रक्रिया जारी है। अब तक 3 लाख 5 हजार 82 किसानों ने पंजीयन कराया है। किसान 10 अक्टूबर तक पंजीयन करा सकेंगे। जबलपुर संभाग में सर्वाधिक 1 लाख 47 हजार 824 किसानों ने पंजीयन कराया है। इसके अलावा रीवा में 94 हजार 384, शहडोल में 21 हजार 456, नर्मदापुरम में 16 हजार 398, सागर में 16 हजार 155 और भोपाल संभाग में 8 हजार 599 किसानों का पंजीयन हुआ है। किसान ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केंद्रों के साथ सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं के पंजीयन केंद्रों पर निःशुल्क पंजीयन करा सकते हैं।

महिंद्रा ने सितंबर में 50,208 ट्रैक्टर बेचे

मुंबई। महिंद्रा ग्रुप की कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड की सितंबर 2026 में ट्रैक्टर की घरेलू बिक्री 50,208 यूनिट रही, जबकि सितंबर 2025 में यह 64,946 यूनिट थी। पिछले साल के आधार पर बिक्री में 23 प्रतिशत की गिरावट आई। बिक्री की मात्रा में इस गिरावट का मुख्य कारण त्योहारी सीजन का समय बदलना



है। पिछले साल त्योहारी सीजन सितंबर में था, जबकि इस साल यह अक्टूबर में शुरू हो रहा है। इस तुलना पर सितंबर 2025 के ऊंचे आधार का भी असर पड़ा है, क्योंकि उस दौरान जीएसटी दरों में कटौती का फायदा मिला था।

सितंबर के प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के फार्म इक्विपमेंट बिजनेस के अध्यक्ष विजय नाकरा ने कहा कि कंपनी ने इस महीने घरेलू बाजार में 50,208 ट्रैक्टर बेचे। वार्षिक आधार पर यह गिरावट मुख्य रूप से त्योहारी सीजन में बदलाव और सितंबर 2025 के उच्च आधार के कारण हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि कंपनी ने इस महीने 1,892 ट्रैक्टरों का निर्यात किया, जो पिछले साल के मुकाबले 62 प्रतिशत ज्यादा है।

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

रबी फसलों की फली फलामा मूल्य 40/-	फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 250/-	धान की उन्नत खेती मूल्य 20/-	सर्पिलों की रक्षा तकनीकें मूल्य 100/-	फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/-	सर्पिलों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 20/-	फलों की खेती मूल्य 100/-
धान की उन्नत खेती मूल्य 100/-	सोयाबीन की खेती मूल्य 20/-	खरीफ फसलों की खेती मूल्य 50/-	कपास की खेती मूल्य 20/-	धान की खेती मूल्य 25/-	पशुपालन मूल्य 100/-	नकली पालन मूल्य 100/-
जैविक खेती मूल्य 50/-	धानी फसलों में बायोडिग्रेडिंग मूल्य 20/-	खानपान प्रबंधन मूल्य 50/-	भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 20/-	कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/-	पत्ताकी फसलों की खेती मूल्य 10/-	मिठाई फसलों की तलाश खेती मूल्य 50/-
गुनाब की खेती मूल्य 20/-	फलों की उन्नत खेती मूल्य 20/-	ट्रेक्टर का रखरखाव मूल्य 50/-	पिन की उन्नत खेती मूल्य 10/-	फलों का भीष उपयोग मूल्य 100/-	पशुपक्षी पालन मूल्य 150/-	

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail: krishak_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम.....पोस्ट.....तहसील.....

जिला.....राज्य.....पिन कोड.....

दूरभाष/कार्या. घर मोबा. :

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक : 700/-	■ द्विवार्षिक : 1300/-
■ त्रिवार्षिक : 1900/-	■ पंचवर्षीय : 3100/-
■ दसवर्षीय : 6100/-	■ आजीवन : 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र “ कृषक दूत ” की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)..... (शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर..... एवं संस्था सील



केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा मध्य प्रदेश के कृषि क्षेत्र के विकास एवं किसान कल्याण के लिए केन्द्र सरकार की ओर से 403.88 करोड़ रुपये की दूसरी किश्त जारी की। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एंदल सिंह कंधाना ने श्री चौहान का आभार व्यक्त किया।

इस साल भी भावांतर योजना से होगी सोयाबीन की खरीदी

3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक किया जायेगा पंजीयन

(मुख्य प्रतिनिधि)

भोपाल। मध्यप्रदेश में लगातार दूसरे साल भी किसानों को सोयाबीन में भावांतर योजना से भुगतान किया जायेगा। योजना का लाभ लेने के लिये किसानों का ई-उपार्जन पोर्टल पर 3 अक्टूबर से पंजीयन किया जायेगा। पंजीयन की अंतिम तिथि 17 अक्टूबर है। इस बार भुगतान प्रक्रिया को आसान बनाने के लिये पंजीयन के समय ही किसानों के खाते में 1 रुपये भेजकर परीक्षण किया जायेगा। किसानों को आधार लिंक खाते का ब्यौरा पंजीयन के समय आवश्यक रूप से देना होगा। पंजीयन, सहकारी समितियों, विपणन संघ की संस्थाओं पर निशुल्क होगा जबकि एमपी ऑनलाइन, निजी सायबर कैफे और कियोस्क पर 50 रुपये शुल्क के साथ किया जायेगा। सिकमी, बटाईदार, कोटवार और वन पट्टाधारी किसानों का पंजीयन केवल सहकारी समितियों में होगा जिसका सत्यापन शत-प्रतिशत राजस्व विभाग करेगा।

पिछले साल प्रदेश में भावांतर योजना के तहत 7.10 लाख किसानों ने पंजीयन कराया था जिनसे लगभग 17 लाख टन सोयाबीन खरीदा गया था। राज्य सरकार ने सोयाबीन उत्पादक किसानों को 1476



भावांतर योजना क्या है?

सोयाबीज बाजार भाव एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य के बीच का जो अंतर होगा उसका भुगतान सरकार करेगी। मंडियों में विक्रय किये गये सोयाबीन की बिक्री पर्ची प्रमाण होगी। एमएसपी पर या उससे ऊपर भाव मिलने पर भावांतर का लाभ नहीं मिलेगा।

करोड़ रुपये का भुगतान किया था। इस साल प्रदेश में 53 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन की बुवाई की गई है। पश्चिमी क्षेत्र में कम बारिश के कारण सोयाबीन का उत्पादन प्रभावित होने की आशंका है। अनुमान के मुताबिक 15 से 17 लाख टन सोयाबीन की खरीदी की जा सकती है। सरकार ने वर्ष 2026-27 के लिये सोयाबीन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 5708 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया है।

कचरे से बने संसाधन, विद्यार्थियों ने दिखाए नवाचार

रायपुर। स्वच्छता में सहभाग-स्वच्छ भारत-विकसित भारत अभियान के तहत भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान रायपुर में बीएससी कृषि विद्यार्थियों ने 'वेस्ट टू वेल्थ' विषय पर विभिन्न मॉडल और नवाचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने घरेलू कचरे, कृषि अवशेष और जैव-अवक्रमणीय अपशिष्ट के पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण, कचरा पृथक्करण तथा मूल्य संवर्धन से संबंधित मॉडल प्रदर्शित किए। इन मॉडलों के माध्यम से कचरे को उपयोगी संसाधन में बदलने के व्यावहारिक और पर्यावरण-अनुकूल उपाय बताए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि अपशिष्ट प्रबंधन का उद्देश्य केवल स्वच्छता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि संसाधनों की पुनर्प्राप्ति और सतत उपयोग पर भी जोर दिया जाना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. के.के. मंडल, डॉ. डेजी बसंदराय, डॉ. एस.के. शर्मा और डॉ. के.सी. शर्मा सहित संस्थान के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

पशुधन और दुग्ध उत्पादन से आएगी गौपालकों के घरों में समृद्धि: अमित शाह

राज्य स्तरीय गौपालक सम्मेलन में पशुपालकों को करीब 100 करोड़ की सहायता

भोपाल। केंद्रीय सहकारिता एवं गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि पशुधन और दुग्ध उत्पादन किसानों एवं गौपालकों की आर्थिक समृद्धि का मजबूत आधार है। पशुधन बढ़ेगा तो दुग्ध उत्पादन बढ़ेगा और इससे गौपालकों की आय में वृद्धि होगी। उन्होंने मध्यप्रदेश के गौपालकों से प्रदेश में प्रतिदिन 50 लाख लीटर दूध उत्पादन का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। शाह भेल दशहरा मैदान में आयोजित राज्य स्तरीय गौपालक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भोपाल में आयोजित यह सम्मेलन प्रदेश में हो रही नई श्वेत क्रांति का संकेत है। सहकारी समितियों के माध्यम से दूध का विपणन करने पर पशुपालकों को बिचौलियों की तुलना में बेहतर मूल्य मिल सकता है। केंद्र सरकार दूध के प्रसंस्करण और उससे दही, मक्खन, पनीर सहित अन्य उत्पाद तैयार करने का इकोसिस्टम विकसित कर रही है।

सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री ने उज्जैन में 255 करोड़ रुपये की



प्रदेश दुग्ध उत्पादन में तीसरा सबसे बड़ा राज्य: सीएम

लागत से बनने वाले तीन लाख लीटर प्रतिदिन क्षमता के मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट का डिजिटल भूमि-पूजन किया। भोपाल में 16.50 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 40 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता वाले फर्मेंटेड प्रोडक्ट डेयरी प्लांट और 12.42 करोड़ रुपये की राज्य स्तरीय केंद्रीय गुणवत्ता प्रयोगशाला का लोकार्पण किया। शिवपुरी में 6.50 करोड़ रुपये की लागत से मिनी डेयरी प्लांट के सुदृढ़ीकरण कार्य का भी लोकार्पण हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में 80 लाख से अधिक गौपालकों का परिवार है और प्रदेश दूध उत्पादन में देश का

तीसरा बड़ा राज्य बन गया है। कृषक कल्याण वर्ष में किसानों की आय बढ़ाने के लिए कृषि के साथ गौपालन, पशुपालन, मत्स्य और अन्य गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने घोषणा की कि प्रदेश के सभी 313 ब्लॉकों के वृंदावन ग्रामों में उत्कृष्ट गौपालक प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। प्रथम पुरस्कार एक लाख, द्वितीय 50 हजार और तृतीय पुरस्कार 25 हजार रुपये होगा। प्रदेश में 168 नई गौ-एम्बुलेंस शुरू की जाएंगी तथा उन्नत नस्ल के पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए बड़े पशुपालक मेले आयोजित किए जाएंगे।

भोपाल में आदर्श गौशाला स्थापना का काम जल्द पूरा करे: डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंत्रालय में विभिन्न विभागों की विकास योजनाओं की समीक्षा करते हुए भोपाल में आदर्श गौशाला की स्थापना का कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। बैठक में नगरीय विकास एवं आवास, खनिज, सूचना प्रौद्योगिकी तथा लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की योजनाओं और प्रगति पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि ग्वालियर, इंदौर और उज्जैन में आदर्श गौशालाओं के संचालन के अनुभवों के आधार पर भोपाल में भी बेहतर मॉडल विकसित किया जाए। उन्होंने राजधानी के विकास में नए आयाम जोड़ने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय नीरज मंडलोई सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।



रबी सीजन में किसानों को पर्याप्त बिजली दें : श्री तोमर

भोपाल। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने प्रदेश में बिजली उत्पादन की स्थिति की समीक्षा करते हुए रबी सीजन में किसानों को पर्याप्त बिजली उपलब्ध कराने के लिए अभी से पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बिजली की बढ़ती मांग के बावजूद आपूर्ति में किसी तरह की बाधा नहीं आनी चाहिए। बैठक में मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के एमडी मंजीत सिंह ने बताया कि प्रदेश में बिजली उत्पादन के लिए कोयले का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है और इसकी आपूर्ति भी लगातार जारी है। श्री तोमर ने विद्युत



उत्पादन संयंत्रों को उनकी क्षमता के अनुरूप संचालित करने तथा वरिष्ठ अधिकारियों को इसकी नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से

विभिन्न विद्युत संयंत्रों के अधिकारी शामिल हुए। अधिकारियों ने बताया कि वर्तमान में किसी भी विद्युत संयंत्र में उत्पादन क्षमता से कम उत्पादन नहीं हो रहा है।

Hero

HF- Deluxe

**बाइक दमदार
दाम शानदार**

**ऑनरोड कीमत ₹71 999/-
(सेल्फ-स्टार्ट)**



कम डाउन पेमेंट | ₹7499/-

**Hero
GoodLife**



**चांदी का सिक्का
जीतने का मौका**

**pine labs कैशबैक
₹5000/- तक**

**गुरुदक्षिणा ऑफर
₹2200/-**

**कम ब्याज दर
@0%**



Hero MotoCorp Ltd, Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No. 2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase-II, New Delhi-110070, India. ICIN: L35911DL1904PLC0173541. For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorized dealer or CALL TOLL-FREE 1800 268 0018 or visit us on www.heromoto.com. Accessories and finance shown may not be part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. *Finance offers are at the sole discretion of the financial institution subject to its respective FDI. *Offer valid only on purchase of new Hero Two Wheeler & Hero Roadi. The installment on the corresponding purchase valid till limited period only. *The Cashback of Rs upto ₹5000 is applicable on the transaction between ₹50,000 to ₹1,50,000. The new revised ex-showroom price is valid for a limited period only. Hero MotoCorp reserves the right to modify or withdraw any or all of these without prior notice. *On-road price of HF- Deluxe Self start variant applicable in Madhya Pradesh. *Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलर: **भोपाल:** वरुणस होंडी (प्रभात पैट्रोल पंप, रागलोन रोड 9289922466, नै.क. रोड 8959905381), **साईं होंडी** (सी.आई.सी. बंगला, नै.क.रोड रोड) 9289922885, **सूनाईट होंडी** (कनहोपेला) 9289923150, **डौंडर:** सुखसमी होंडी (अन्नापूर्णा रोड) 9289922718, **वी.एन. होंडी** (एयरपोर्ट रोड) 9289923081, **रैडी ऑटोमोबाइल** (अवतकृष्णी) 9289922711, **टक्कादानी ऑटोमोबाइल** (मल्लाईली रज्जवाट के पास) 8871444414, **सेटना ऑटोमोबाइल** (देवाता नाका), 9821741577, **म्यालिख:** वसुका होंडी (जिंदी रोन्ड 9289922371, गुहार 4089928, कम्पू 4072000), **रज्जवाट होंडी** (फूलबाग 9289922483, राजिवी बिलास 2438534), **जबलपुर:** गुहार होंडी (आजय जिलेन ल्याईव) 9289922350, **बुधबान होंडी** (मेणियर रोड) 9289922353, **मदन महल** 911100352, **रमोह नाला** 911100344), **उन्नाव:** सिंघा होंडी (जोगिन, देवास रोड) 9289922354, **लौहिया होंडी** (मिलनगन नदी के समीप) 9289922718, **बैतुल:** कन्देलाल होंडी, 9289922624, **सीहोर:** नन्दी होंडी (कन्देलाल नदी पैट्रोल पंप, डौंडर नाका) 9522257587, **झापर:** आनंद होंडी 9289922871, **गुना:** गगन होंडी 9289922358, **अधोका नगर:** आर्य होंडी 9821743383, **होशंगाबाद:** पुष्पाधिला होंडी 9289922380, **इटावा:** राहुल होंडी 9289922491, **बिदिश:** पाल होंडी 9289922379, **दमोह:** इन्दिया ऑटो होंडी 9289922757, **दाना:** रीजल होंडी (अनवातगंज, जकोनिया) 9289922378, **टीकमगढ़:** आनंद होंडी 9289923187, **अतपुर:** आनंद होंडी (साईं रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), **मड़नाबी:** धर्मा होंडी 9289922742, **मुहानपुर:** श्रीनी होंडी 9289922372, **देवास:** सुख्या होंडी (ए.सी. रोड 9289922488, नवाबनगर 8863080382), **पार:** साडी होंडी 9289922518, **हार विपलिन:** श्रीराम होंडी 9289923154, **ठासना:** नागोजा होंडी 9289922679, **गुडी:** अन्नपूर्णा होंडी 9289922743, **खण्डवा:** जगज होंडी 9289923018, **खजोरा:** निमाद होंडी 9289922378, **सहू:** लख होंडी 9289923176, **पौलपुर:** सुग्रीवी होंडी 9289923047, **सनातन:** रमोह होंडी 9289922774, **बालासाह:** जायराज होंडी 9289922572, **खिन्वाड़ा:** राजक होंडी 9289922805, **समरस:** शुभा होंडी 9289922800, **नरसिंहपुर:** रजल होंडी 9289922377, **रीवा:** बहिरा होंडी (टी.पी. नगर 9252283333, इलाहाबाद रोड 917105391), **रतना:** रघु होंडी 9289922356, **बदिका होंडी** 9289923108, **खडौल:** विजय होंडी 9289923108, **गुफा होंडी** 9289922370, **कटनी:** हर्ष होंडी 9289923106, **बैरह:** कुन्द होंडी 9289922743, **बजरंग गौड:** 7364588000, **सीवी:** रामेन्द्र गौड 9289923103, **सिन्धी:** सुश्री होंडी 9821745435, **गौड:** श्रीनी ऑटोमोबाइल, 9821749342, **मिन्ट:** बिलन होंडी 9289922787, **बदिका:** बिल होंडी 9289923172, **मुन्ना:** गगन होंडी 9289922678, **बोपुर:** आशीष होंडी 9289922832, **बिलपुर:** सुग्रीवी होंडी 9289922571, **बदलनगर:** स्वास्तिक होंडी 9289922773, **धानपुर:** राधा होंडी 9289922833, **रतना:** सतीशलेन्द होंडी (सहू रोड 9289922375, बैतुला रोड 07412-408600) **नीमरा:** उत्तम होंडी 9289922367, **कन्दौली:** रमेशधन होंडी 9289922369, **जावरा:** हिलाखल होंडी 9289923105.

रायपुर: सतीशगढ़ होंडी 9289922351, **आरसन होंडी** 9289922864, **रानवादागांव:** नय होंडी 9289922367, **धमराही:** सत्योम होंडी 9289922525, **कलकत:** राहुल होंडी 9289922834, **नहासपुर:** नल होंडी 9289922623, **कलैयालाना:** अग्रवाल होंडी 9289922959, **आरंग:** श्री राज होंडी 9289922968, **रसेनरा:** श्री साई होंडी 9289922835, **राजवा:** सत्योम होंडी 9289922958, **नगदलपुर:** किनराल होंडी 9289923084, **दंतवाड़ा:** नय किनर होंडी 9289922990, **दण्डीरानहटा:** लक्ष्मी होंडी 9289922983, **आवापड़ा:** कुशल होंडी 9289923105, **मिलाई:** हेरिशन होंडी 9289922355, **चोहान मोटर्स** 9289923107, **दुर्ग:** उत्तम होंडी 9289923114, **उन्नाव होंडी:** 7001595300, **बिलासपुर:** रजल होंडी 9289922484, **मैनेसरी होंडी** 9289922718, **अमिकापुर:** आनंद होंडी 9289922369, **सगुणा होंडी** 9289923110, **कोरवा:** सांति होंडी 9289922813, **छपीलगाड़ होंडी** 9289923057, **समरपुर:** नोयल होंडी 9289922373, **आदित्य होंडी** 9289923081, **जोगनी:** आनंद होंडी 9289922772, **बैकुलपुर:** आर.के. होंडी 9289922812, **नक्षत्र:** आनन होंडी 9289922909.